वर्ष 33 अंक : 5 24.9.2010 शुक्रवार (सितंबर–अक्तुबर) शुल्क– प्रति अंक : 10.00 रु. वार्षिक : 50.00 रु.

भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

અક્ષરધામ ૨૭-[illegible]
પાટીગઢ-
પ.પૂ.દિનકરભાઈ પટેલ-
[illegible]-

[illegible] શુભાશિષ

સંબંધે દેહ માનવ - દેવ ગણાય.
તો, સર્વ દેહે સદ્‌ગુરુ ને સંબંધ -
અતિ તો અલૌકિક સંબંધ - પરમહંસોને પણ [illegible] ગણાતા નહિ -
માટે "સાધુનું ગાન" અનિવાર્ય છે ને સાધુતા [illegible] પડે -
ને તેમાં ગુણાતીતપદ પમાય.
૩. તેનું તેજ સતત સંભારે ને અનુભૂતિ ગુણાતીત -
[illegible] તો અઘરું છે -
તો, [illegible] ઘણા પ્રકારના [illegible] -
અનુગ્રહ પણ બહુ પ્રકારના થાય છે
પણ અક્ષરબ્રહ્મ ઘનશ્યામાનંદ સ્વામી માટે
પ્રાયશ્ચિત પણ પોતે કીધું
વિશિષ્ટ પ્રકારનો અનુગ્રહ કીધો ને [illegible]
ને [illegible] પાછા [illegible]
ને [illegible] ગોપાળાનંદ સ્વામીને દિવ્ય [illegible] કરાવ્યો.
[illegible]
ને [illegible]
પણ [illegible]
[illegible] પડી જાય - ને [illegible] માટે
[illegible] વિશિષ્ટ અનુગ્રહરૂપ [illegible]
[illegible]

આજ્ઞા [illegible]
[illegible]

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

उद्घाटन के लिए इंद्रधनुष के सात रंगों के रिबन्स को काटते हुए...

प.भ. प्रमीतभाई एवं प.भ. श्रीवास्तव साहेब

प.भ. देवांगभाई

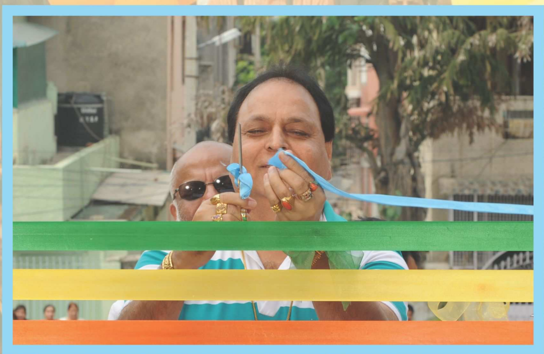

प.भ. कमलदेवजी

प.भ. अमित मदानजी

प.भ. सेठ धीरुभाई कापड़िया

प.भ. पुनीतजी

प.भ. डॉ. अरुणभाई भट्ट

'सौहार्द' का सफ़ेद रिबन खोलते हुए पू. मल्कानी अंकल

नए वर्ष के शुभाशीष

अक्षरधाम २७.८.८४
वॉकीगन
C/O, दिनकरभाई पटेल
इलीनोइ , यु.एस.ए.

‘सर्वदेशीय ज्ञान’ से ही विकास होता है।
अतः ‘सर्वदेशी सद्गुरु’ का ही सेवन करना।
वर्ना तो ‘बीजरूप स्वभाव’ परमहंसों के भीतर भी रह गए, यूँ चेतना की प्रगति में रुकावट डालें।
सो, ‘साधु का ज्ञान’ अनिवार्य है और साधुता सीखनी ही पड़ती है और तभी गुण से परे हो पाएंगे।
या तो– प्रभु एवं संत को सतत याद करें और अनुवृत्ति के मुताबिक वर्तें; लेकिन, यह मार्ग कठिन है।
तो, जिस प्रकार प्रसन्नता कई प्रकार की होती है वैसे ही अनुग्रह भी बहुत प्रकार का होता है।
लेकिन, अक्षरब्रह्म ने घनश्यामानंदस्वामी के लिए प्रायश्चित् भी खुद ही करके,
विशिष्ट प्रकार का अनुग्रह करके, अमाप बल दिया था और वड़ताल की महंताई वापिस सौंपी थी एवं
अनादि महामुक्त गोपालानंदस्वामिजी में दिव्यभाव करवाया था।
यूँ, प.पू. बापा ने जोग तो दे दिया है।
ऐसी मौज का कोई मूल्य नहीं होता; लेकिन लाभ लेना नहीं आता।
तो अब ऐसी सूझ पड़ जाए और सुरुचि प्रगटे यही सभी बड़े स्वरूप अनुग्रह के रूप में बख़्शिश दें इसी अभ्यर्थना के साथ–
दादुकाका के हेतपूर्वक नए वर्ष के जय स्वामिनारायण!

प.पू. काकाजी महाराज द्वारा नए वर्ष निमित्त दिए गए उपरोक्त शुभाशीष से मानो एक स्पष्ट मार्गदर्शन मिलता है कि संबंध में आए चैतन्य का सतत विकास तो **‘सर्वदेशीय साधु’** के संग से ही संभव हो सकेगा। साथ ही, प.पू. काकाजी ने अतिशय कृपा करके स्पष्ट बता भी दिया कि हमें ऐसा जोग मिला है, लेकिन **लाभ लेना नहीं आता।**

वह क्या ? तो, हम अपनी प्राकृत एवं शापित बुद्धि के कारण, **‘बाह्यदृष्टि’** रखते हुए, उसका लाभ नहीं ले पाते।

कैसे ? तो, हम **भक्तों के दोष-स्वभाव-प्रकृति-क्रियाओं के मूल्यांकन में ही उलझे रहते हैं।** इसी कारण हमारी अपूर्णता व कल्पना टलती नहीं और... **हम अपने ही सत्यों-मान्यताओं की पुष्टि करते हुए अन्य आधारों से संतुष्ट रहने का प्रयास करते हैं।** साथ ही साथ भीतर में एक उद्वेग भी रहता है कि इतने साल से संत का समागम करने के बावजूद हम में बरकत क्यों नहीं आती ?

पर, अक्षरब्रह्म द्वारा किए गए **विशिष्ट प्रकार के अनुग्रह** की मिसाल देकर प.पू. काकाजी ने जब यहाँ तक बता दिया है कि–

प.पू. बापा ने ऐसा ही जोग तो दे दिया है
और
उन्होंने अनुग्रह करके हमारी खोट की सूझ भी दे दी है,

*तो, यह **'बाह्यदृष्टि'** छोड़ कर,*
*यानि – जैसा कि **प.पू. योगीबापा** दबावपूर्वक कहते –*
***'अभाव-अवगुण का रास्ता ही स्टॉप-बंद'** करके,*
दूसरे आकार नज़र में ही न लेते हुए
*हम **दिल की सच्चाई से मानें** कि हर एक में **'मेरे प्रगट प्रभु'** ही खेल रहे हैं।*
*सर्व के कर्ता, हर्ता, नियंता, प्रेरक **'मेरे प्रगट प्रभु'** ही हैं –*
*यह **केवल बोलने में नहीं, बल्कि जीव में मानते हुए** भीतर से उन्हें ही पकड़े रखें।*

वचनामृत प्रथम ४९ के मुताबिक हम ऐसी **'अंतर्दृष्टि'** करने की सूझ को पकड़ कर बड़ों के **'विशिष्ट अनुग्रह'** से, **मौज में** जीतेजी अक्षरधाम का सुख भोगें, प्राप्त करें और अन्यों को भी बाँटते हो जाएं – यही उनके चरणों में **दीवाली** एवं **नए वर्ष** की प्रार्थना!

✡✡✡

छायो रंग छायो.............सुहृद् रंग छायो!

हाल ही में ३, ४ और ५ सितंबर – इन तीनों दिन प.पू. काकाजी की प्रासादिक धरती शिकागो में, विविध कार्यक्रमों द्वारा **प.पू. काकाजी स्वरूप प.पू. दिनकरभाई** और प.पू. काकाजी के अर्जुन यानि **प.पू. महेन्द्र बापू** का **६५वाँ प्राकट्य दिन 'गुणातीतभावना'** को उजागर करते हुए **'सुहृदम् महोत्सव'** के रूप में मुक्तों ने मनाया।

और... अब गुणातीत समाज के खूब महत्त्वपूर्ण उत्सवों का माहौल बनना शुरू हो गया है; जैसे कि **विजयादशमी** – आसुरी वृत्तियों पर विजय दिला कर प्रभु के स्वरूप में हमें लय और लीन कर देने वाली गुणातीत विभूति **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का पार्षदी दीक्षा दिन!**

इसी प्रकार 'अक्षरब्रह्म' के अवतार और भगवान स्वामिनारायण के रहने का धाम एवं जूनागढ़ के महंत होने के बावजूद –

- अपने व्यवहार से साधुता की – रांकभाव की सच्ची सीख देने वाले,
- त्याग – वैराग्य की चरम सीमा पर जीते हुए भी सत्संग समाज के प्रत्येक मुक्त के प्रति अप्रतिम करुणा और वात्सल्य का भाव रखने वाले,
- महाराज के प्रति पराभक्ति एवं स्वामी-सेवकभाव का मूर्तस्वरूप,
- निरपेक्ष सेवा से सत्संग में आत्मीयभाव प्रगटाने वाले,
- बड़े संतों एवं आचार्य महाराज की पूरी मर्यादा रखने वाले,
- अंतःकरण को भेदती बलभरी बातों से मुक्तों को गुणातीतभाव में ले जाने वाले

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी का प्राकट्य दिन यानि **शरदपूर्णिमा** – श्री अक्षरपुरुषोत्तम संप्रदाय के लिए सच्ची दीवाली है!

और... इसी मंगलकारी दिन अपने आश्रितों के हृदय को भगवा करने के लिए **प्रगट ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसाद-स्वामिजी ने भागवती दीक्षा** ग्रहण की थी! साथ ही – प.पू. काकाजी को रोम-रोम में प्रगटा कर संबंध में आते मुक्तों को प.पू. काकाजी की अखंड हाज़िरी की निरंतर दिव्य प्रतीति करवाते **प.पू. दिनकरभाई का प्राकट्य भी १ अक्तुबर, शरदपूर्णिमा के दिन हुआ!**

आइए, ५ सितंबर की सायं 'सुहृदम् महोत्सव' के अंतिम सत्र में सभी मुक्तों पर **प्रगट ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामिजी** द्वारा बरसाई गई अमृत आशीष वर्षा के निम्न मननीय मुद्दों को पढ़ कर ऐसे उत्सवों के निमित्त सभी गुणातीत स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना करें कि हमें हर प्रकार से सुखी करने के लिए आपने जो कसनी सही है, एवं केवल हमारे श्रेय के लिए ही निरंतर उद्यम करते रहते हैं, उसे महसूस करते हुए यत्किंचित ऋण अदा करने के लिए आपकी मर्जी में जीने का संकल्प करें...

* भगवान स्वामिनारायण ने पृथ्वी पर पधार कर अद्‌भुत संबंधयोग दिया। गुणातीत पुरुषों ने जीवन में एक ही सूत्र दिया– **'संबंध देखो'। काकाजी संतों को हमेशा यही कहते– 'संबंध देखो'।**

* शायद कोई 'धर्म' सिद्ध कर सके, 'ज्ञान' सिद्ध कर सके, 'वैराग्य' सिद्ध कर सके, पर भगवान की 'भक्ति' गुणातीत पुरुष के बिना प्रगट नहीं होती!

* अद्‌भुत भक्ति के स्वरूप गुरु गुणातीत! कैसा जीवन जीकर गए! जूनागढ़ की धरती पर 'ए टू झेड' क्लास को भक्ति से सराबोर कर दिया। भगवान स्वामिनारायण ने उन्हें वड़ताल की धरती पर भेजा। निरंतर भगवत्‌भाव से वे सेवा करते ही रहे, करते ही रहे, करते ही रहे।

  गुणातीतानंदस्वामिजी ने कभी भी किसी के स्वभाव की ओर नहीं देखा। बीमार या तंदुरस्त –सभी मुक्तों की गुदड़ियाँ भगवद्‌भाव से धोते ही रहे। एक दिन तो गुणातीतानंदस्वामिजी को गुदड़ियों की गठरी ले आते देखकर श्रीजी महाराज ने तुरंत कहा– *योगी, गुदड़ियाँ उतारो।* उन्होंने वे उतार दीं और बीमार साधु अपनी-अपनी गुदड़ी ले गए; परंतु, शर्मिंदगी के कारण स्वस्थ साधु अपनी गुदड़ी लेने नहीं आए। इस प्रकार –

  गुणातीत यानि अखंड संबंधयोग!
  गुणातीत यानि अखंड महिमा!
  गुणातीत यानि अखंड दासत्व!

* जूनागढ़ मंदिर की शुरुआत हुई। चार बार तो वहाँ के महंत बदले गए। अंत में महाराज ने सोचा कि गुणातीतानंदस्वामी को भेजें। वहाँ कुंजविहारीदास और अन्य एक साधु ने गुणातीतानंदस्वामिजी के लिए यहाँ तक कहा– न तो खाता है, न ही खाने देता है; न स्वयं सोता है, न ही दूसरों को सोने देता है।

  गुणातीतानंदस्वामी तो विज़नरी और भगवान के अंतर्यामी पुरुष थे। हम सभी जानते हैं कि ४९ वर्ष, तीन महीने और दो दिन श्रीजी महाराज पृथ्वी पर रहे –बहुत कम समय रहे। सो, साकार ब्रह्म ने संकल्प कर लिया था कि किसी भी प्रकार श्रीजी महाराज के हाथों जूनागढ़ मंदिर की मूर्तिप्रतिष्ठा करवानी है। अतः उन्होंने तेजी से काम शुरू किया था, यद्यपि, दूसरी ओर, संतों का खूब विरोध था। पर, साथ ही भगतजी महाराज, जागास्वामी, कृष्णजी अदा जैसों का सुंदर सर्जन भी किया!

* साकारब्रह्म ने जूनागढ़ और वड़ताल की धरती पर जो अद्‌भुत दर्शन करवाया, वहीं से हमें शुरुआत करनी है। गुरु गुणातीत ने हमें बहुत कुछ विरासत में दिया है। **'अक्षरब्रह्म' के भाव से हमें बोलना है, चलना है, सेवा करनी है, जीवन जीना है। हम अक्षररूप हैं, यहीं से शुरुआत करनी है।** संत अक्षरपुरुषोत्तम महाराज का स्वरूप हैं; हमारे लिए ये ही ध्यान की मूर्ति हैं।

* 'एग्री' (ओरियंट कंपनी) सुलगी (का केस चला), तब से ताड़देव की धरती पर काकाजी-पप्पाजी और कांतिकाका ने भजन का योग शुरू किया। काकाजी-पप्पाजी ने सभी में अखंड महिमा प्रगटाई। बापा के प्रति अनूठी प्रीति और निष्ठा के फलस्वरूप ताड़देव की धरती पर काकाजी और पप्पाजी ने एक ऐसा दिव्य वातावरण प्रगटा दिया कि **सभी महिमा में ही रहते हो गए।** वह दर्शन हमने किया है और हम सभी को ऐसा जीवन जीना है। **स्वरूपनिष्ठा और महिमा जैसे-जैसे बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे सारा भार उन्हीं को सौंप कर जी सकते हैं**–यह एक सिद्ध बात है।

* निष्ठा के चार गुण हैं–
  तू सदा दिव्य साकार, तेरे सभी सदा दिव्य साकार।
  आप दिव्य हैं, आपके संबंध वाले दिव्य हैं।
  आप कर्ता-हर्ता हैं।
  आप हितकारी और मंगलकारी हैं।
  यह मानना बहुत मुश्किल है। लेकिन, **यदि ये चारों चीजें इकट्ठी हों, तो हमारे जीव में निष्ठा पक्की हो गई ऐसा कहा जाएगा। ऐसी अद्‌भुत निष्ठा काकाजी की थी।**

* १९८५ में शिकागो की धरती पर दिनकरभाई के सहज जीवन, सहज रंकभाव, सहज गुरुभक्ति, भक्तों के प्रति उनकी अद्‌भुत भक्ति का मैंने जब दर्शन किया, तब खूब आनंद हुआ था। उनके बेटे रूपित के साथ का प्रसंग–उनकी धीरज, सरलता और स्थिरता मुझे खूब टच कर गई थीं।

* दिनकरभाई के जीवन में इतनी सरलता पहले से ही दिखाई देती है। कोई रौब नहीं, दिखावा नहीं, प्रदर्शन नहीं, बस लगातार सेवा करते ही रहे, करते ही रहे। तभी काकाजी की अद्‌भुत प्रसन्नता प्राप्त की।

* दिनकरभाई के जीवन की ओर जब देखते हैं तब महिमा का लगातार स्त्रोत दिखाई देता है। बापू के साथ अद्‌भुत, अद्‌भुत, अद्‌भुत – काकाजी जैसी–नेचरल प्रीति दिखाई देती है। अखंड संबंधयोग, अखंड पॉज़ीटीवीटी। **'सुहृदम् महोत्सव' मनाने के लिए आए हैं, हम सभी को इसी प्रभाव में अखंड रहना है।**

* **दिनकरभाई के समक्ष हमारा मस्तक इसलिए सहज झुकता है क्योंकि वे ज़ीरो होकर जीते हैं।** निश्चिंतता से वे इसीलिए बैठे हैं क्योंकि उनके रोम-रोम में से हमेशा एक ही आवाज़ आती है – 'तू ही, तू ही–तेरे कारण ही सब कुछ है।' हम सब यहाँ उत्सव में आए हैं, तो यह समझ अपने साथ लेकर जाएं।

* दिनकरभाई के साथ बैठता हूँ तो मुझे आनंद होता है। उनकी नेचरालिटी मुझे पसंद आती है। **प्रभु को कर्ता-हर्ता मान कर जीने की जिसकी निष्ठा पक्की हो, वहीं नेचरालिटी आती है। जितनी तुम्हारी निष्ठा पक्की होगी, उतनी सहजता प्रगटेगी।** 'मैं कुछ हूँ'–ऐसा जब तक भीतर में रहेगा, तब तक सहजता आएगी नहीं।

* दिनकरभाई निश्चिंत होकर बैठे हैं, क्योंकि उनकी निष्ठा पक्की है। तुम उत्सव मनाओ या न मनाओ तो भी क्या? आराम से बैठे हैं और सब के दर्शन का सुख ले रहे हैं। तुम गुणगान गाओ तो भी क्या और न

गाओ तो भी क्या? पर, वे तो निष्ठा पकड़ कर बैठे हैं। केवल 'तू ही तू ही' की पुकार से जो व्यक्ति जीता हो, उसके लिए अच्छा या बुरा, मान या अपमान सब कुछ एक समान है। ऐसी अच्छी विभूति हमें मिली है, हम सभी बहुत नसीबदार हैं।

* संसार में अनेक प्रकार की उपाधियाँ खड़ी होगीं ही। संसार यानि ज्वार-भाटा। हमारी निष्ठा कैसे पक्की हो, इसलिए उत्सव मनाए जाते हैं। संबंध कैसे दृढ़ करना, यह ख्याल आता है। दिनकरभाई के प्रागट्य दिन पर हम इसलिए आए हैं कि उन्होंने काकाजी का कैसे सेवन किया, इसका ख्याल आए।

* स्टेज पर रुई के ढेर दिखा कर इन लड़कों ने कितना अच्छा भाव दर्शाया कि हमें रुई की भाँति हल्का होकर जीना है। कोई यदि कहता है कि मेरे जीवन में प्रसंग नहीं बनते, यह गलत बात है। प्रसंग तो बनते ही रहेंगे।

  जब तक हम अहंता-ममता के आधीन जीवन जीते हैं, तब तक प्रसंग बनने वाले ही हैं। पर, यह अहंता-ममता कौन निकालेगा? कौन सरल बनाएगा? कौन दोषों का दर्शन करवाएगा? सो, कर्ता-हर्ता मान कर जीना सीखें।

* यदि तुम्हारी निष्ठा पक्की होगी, तभी सरलता से जिया जा सकता है। जब कर्ता-हर्ता प्रभु को मानेंगे, तभी सहजता से जिया जा सकेगा। प्रसंग तो बनते ही रहेंगे, लेकिन यदि **कर्ता-हर्ता प्रभु को ही मानेंगे, तो रुई की भाँति हल्कापन महसूस करेंगे।**

* भगवान और उनके संबंध वाले सभी बड़े हैं। 'मैं कुछ समझता हूँ, मैं व्यवस्थित हूँ या मैं कुछ अच्छा हूँ'–जब तक ऐसे प्रभाव में जीते रहेंगे, तब तक गल्ती खाते रहेंगे। प्रभु को कर्ता-हर्ता मान कर जी नहीं पाएंगे। परंतु, 'कर्ता-हर्ता' शब्द को गहराई से मानते हुए, मानते हुए, मानते हुए यदि हम शुरुआत करेंगे, तो पूर्णाहुति जल्दी हो जाएगी।

* **जब तक किसी की क्रिया नहीं जचँती, तब तक निष्ठा में 'खोट' है, और संबंध देख नहीं सकते।**

* हम सभी को बस एक ही काम करना है–माहात्म्यज्ञान युक्त निश्चय और गुरुभक्ति अदा करने की अद्भुत, अद्भुत, अद्भुत तृष्णा! यदि प्रभु का निश्चय माहात्म्यज्ञान युक्त नहीं होगा, तो बुद्धियोग प्राप्त नहीं होगा और हल्के फूल के समान जी नहीं पाएंगे। अतः सब कुछ प्रभु के सिर पर छोड़ कर ही जीना।

* हमें अक्षररूप होना है। **अक्षररूप होने के लिए गुणातीत पुरुष के जीवन में हमें डूब जाना है। इसीलिए यह उत्सव है।** उत्सव इसीलिए होते हैं कि हमारी अक्षरब्रह्म की ओर यात्रा होती जाए, होती जाए।

  जिस-जिसने इस उत्सव का लाभ लिया होगा, जिस-जिसने उत्सव में भजन किया होगा, जो-जो उमंग से उत्सव में आए होंगे, यहाँ थोड़ा प्रसाद लिया होगा, उसका संबंध बढ़ने वाला ही है, बढ़ने वाला ही है। 'गुणातीत स्थिति' एक दिन का काम नहीं है। लेकिन, जैसे-जैसे ऐसे उत्सवों में जाएंगे, वैसे-वैसे संबंध बढ़ता जाएगा।

✡✡✡

‘योगी परिवार का अद्‌भुत सर्जन..... प.पू. काकाजी की सौरभ!’

यादं कराने...

2012 के मंगलमयी वर्ष में प.पू. गुरुजी का 75 वां प्राकट्योत्सव
‘योगी परिवार अमृत आनंदोत्सव’ के रूप में मनाएंगे;
जब **‘एकता ही एकांतिकभाव’** के सिद्धांत से ब्रह्मकिल्लोल करने का
एक अनमोल मौका हम सभी को मिलेगा।
सो, हम ‘गुरुभक्ति’ अदा करने का यह मौका न चूकें...
प.पू. गुरुजी के 75 वें प्राकट्योत्सव निमित्त
प.पू. गुरुजी और प.पू. काकाजी के अनुभव,
जो आपको भीतर तक छू गए हों,
उन्हें हिन्दी / अंग्रेजी में लिख कर नीचे दिए पते पर भेजते रहें,
जिससे कि ‘भगवत् कृपा’ के इस स्तंभ के अंतर्गत
वो देने की भक्ति हमसे अदा हो सके।

सेवक **प्रभाकर** के हार्दिक जय स्वामिनारायण!

યાદ કરાવવા...

2012 ના મંગળકારી વર્ષે પ.પૂ. ગુરૂજીનો ૭૫મો પ્રાગટ્યોત્સવ
‘યોગી પરિવાર અમૃત આનંદોત્સવ’ રૂપે ઊજવીશું;
જ્યારે **‘એકતા એ જ એકાંતિકપણું’**ના સિદ્ધાંતે બ્રહ્મકિલ્લોલ કરવાનો
એક લ્હાવો અમ સહુને મળશે.
આપણે ‘ગુરૂભક્તિ’ અદા કરવાનો આ લ્હાવો ચૂકીએ નહીં...
પ.પૂ. ગુરૂજીના ૭૫મા પ્રાકટ્યોત્સવ નિમિત્તે
પ.પૂ. ગુરૂજી અને પ.પૂ. કાકાશ્રીના અનુભવ-પ્રસંગો
જે આપને અંતરતમ સુધી સ્પર્શી ગયા હોય,
એ ભલે ગુજરાતીમાં લખીને નીચેના સરનામે* મોકલતા રહેશો,
જેથી ‘ભગવત્ કૃપા’ના આ સ્તંભ હેઠળ
એ આપવાની અમે ભક્તિ અદા કરી શકીએ.

સેવક **પ્રભાકર**ના હાર્દિક જય સ્વામિનારાયણ!

---

*प.भ. प्रभाकर राव / प.पू. आनंदी दीदी C/o ‘भगवत् कृपा’
श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर, ‘ताड़देव’, काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग, अशोकविहार-III, दिल्ली – 110 052
❋ फोन – 4709 1281, 2730 1327 ❋ फॅक्स: 4709 1280 ❋ ई मेईल – taaddev@ydsd.org, aksharjyoti@ydsd.org

आशीर्वाद...

ગુરૂહરિ પપ્પાજી, કાકાશ્રી અને બાના લાડકવાયા દિલીપભાઈ,
બ્ર. સ્વ. યોગીજીમહારાજના હસ્તે સંતની દીક્ષા લઈને
બ્ર. સ્વ.કાકાશ્રીની બીનશરતી શરણાગતિ લઈ
અશેષ સમર્પણ કરી અનંત મુક્તોના જીવનપ્રાણ બની
ભારતના પાટનગર દિલ્હીને તીર્થત્વ બક્ષનાર
બેતાજ બાદશાહ બની ગયા.
ગુરૂજી પૂર્વાશ્રમમાં એક વખત **તારદેવ** કાકાશ્રીના નિવાસમાં
જેને યોગીજી મહારાજ **'અક્ષરધામનું તખત'** કહેતા, ત્યાં આવ્યા હતા;
ત્યારે એમણે પપ્પાજીને કહ્યું હતું કે *'બાબુ કાકા, તમે મને નથી ગમતા.'*
ત્યારે પપ્પાજીએ કહ્યું હતું કે, *' પણ તું તો મને ગમે છે ને.'*
આવો વાર્તાલાપ કરનાર,
અ.મૂ.અ.મૂ. ગુણાતીતાનંદસ્વામી જેવી મુખાકૃતિ ધારણ કરનાર,
અસાધારણ બુદ્ધિના ધારક,
નિર્મળ, નિર્દોષ આંખોવાળા,
આતમસ્પર્શી વાણીનો ધોધ જેના મુખમાંથી પડે છે,
જેણે કાકાજી, પપ્પાજીની પ્રસન્નતા પામવા
ભારતની રાજધાની દિલ્હી જવાની આજ્ઞા અવિચારીપણે વિચારીને પાળી છે,
યોગીજી મહારાજનો લાડકો 'દિલીફ',
સોનાબા જેને બહુ વ્હાલમાં **'રિસામણી રાધા'** કહેતા
અને
નિજ શિષ્યગણના જીવનપ્રાણ ગુરૂજી સાધુ મુકુંદજીવનદાસજીના અમૃતપર્વે
હે ભગવાન સ્વામિનારાયણ ! આપના પુનીત ચરણે ને પાવન કર્ણે
અમ સહુની પ્રાર્થના છે, વિનંતી છે કે–
મહારાજ ! ગુરૂજીને નિરામય રાખજો જેથી એમની શતાબ્દીનો આનંદ
સહુ મુક્તો એમના પ્રત્યક્ષ સાન્નિધ્યમાં માણી શકે.
એવી ધન્યતાનો અનુભવ કરાવવાનો અનુગ્રહ કરશોજી.
એમની નાની કાયામાં હેતાળ હૈયું સમાયું છે.
એમના કેશ વિનાના મસ્તકમાં અસાધારણ મહાત્મ્ય સિદ્ધ થઈ ગયું છે.
તેથી તેમની વાણી સાંભળવી ને ઝીલવી ગમે છે
ને

સ્મૃતિમાં રહી જાય છે, ટાણે યાદ આવી જાય છે.
એક વખત પપ્પાજીનો પ્રાગટ્યદિન ઊજવાતો હતો.
ત્યારે ગુરૂજીએ પ્રવચન કરતાં કહ્યું હતું કે
'પપ્પાજી ઘણી વખત એમ કહે છે કે, હું તમારો વકીલ છું;
એનું કારણ એ છે કે જજને બાંધ્યો પગાર હોય,
એટલે એની આવક સીમિત હોય
ને
વકીલને પોતે જેવો કેસ લડે તેવી આવક થાય.
માટે એ વધારે સંપત્તિવાન હોય છે.'
ગુરૂજીના આ શબ્દો હું હજી ભૂલી નથી.
વળી ગુરૂજીને કંઈક અળવીતરું થાય તે બહુ ગમે.
એક વખત પપ્પાજી સાથે દિલીપભાઈ
મુંબઈમાં કાંદીવલીમાં રામજીકાકાને ઘેર ગયા હતા.
પપ્પાજી રામજીકાકા સાથે હીંચકા પર બેઠા હતા.
હીંચકો રામજીકાકા ઠેસ મારીને ઝુલાવતા હતા.
અચાનક એવી ઠેસ વાગી કે હીંચકાનો એક સળિયો નીકળી ગયો;
એટલે પપ્પાજી ને રામજીકાકા સરી પડયા.
આ જોઈને દિલીપભાઈ એટલું બધું હસ્યા કે
એમની આંખમાંથી પાણી ટપકી પડયું.
આ વાત પપ્પાજીએ ઘરે આવીને કરી કે
દિલીપ એટલું હસ્યો – એટલું હસ્યો કે એને જોઈને મને બહુ જ હસવું આવ્યું.
આ વાત કરતા કરતા પપ્પાજી પણ ખૂબ હસ્યા
ને
એમની આંખોમાંથી પણ પાણી ટપકી પડયું.
૧૯૬૨માં ઘનશ્યામ અમીન બાર વર્ષનો હતો.
એનું કાકડાનું ઑપરેશન નાયર હોસ્પીટલમાં કરાવ્યું હતું.
જે દાખલ કરવા ગયા હશે એમણે
ઘનશ્યામની ઉંમર તેર વર્ષની લખાવી હતી,
એટલે એને ઍડલ્ટસના વોર્ડમાં દાખલ કરવો પડયો.
ત્યાં મોટી ઉંમરના જાતજાતના ઑપરેશનવાળા દર્દીઓને જોઈને એ બહુ ડરી ગયો હતો.
પપ્પાજીએ મને કહ્યું કે *તું ઘનશ્યામને જોઈ આવ. આ દિલીપ તારી સાથે આવશે.*
એટલે અમે બન્ને હૉસ્પીટલમાં ગયા.
હજી તો હૉસ્પીટલના કમ્પાઉન્ડમાં પ્હોંચ્યા ને મારી નજર ઉપર ગઈ
તો ઘનશ્યામ તો વોર્ડના વરંડામાં ઊભો હતો.

એની રડેલી આંખો જોઈ મને દયા આવી ગઈ.
મેં દિલીપભાઈને પૂછ્યું કે *દિલીપભાઈ શું કરશું ?*
અમે બન્નેએ મસલત કરી કે એને ઘરે જ લઈ જઈએ.
એટલે દિલીપભાઈ દોડયા ટૅક્સી લેવા
ને
મેં ઘનશ્યામને ઈશારાથી સમજાવ્યું કે તારા કપડાં ને પાણીનો પ્યાલો લઈને નીચે આવતો રહે.
એક બાજુથી એ નીચે આવી ગયો
ને
બીજી બાજુથી ટૅક્સી લઈને દિલીપભાઈ આવી ગયા.
અમે કોઈ પણ ડૉક્ટરને બતાવ્યા વગર ઘનશ્યામને લઈને ઘર ભેગા થઈ ગયા.
એક વખત કાકા, પપ્પા ને બીજા બે હરિભક્તો જે સત્સંગમાં મોટેરા ગણાતા હતા,
તેઓ ગોંડલથી શરદપૂનમનો સમૈયો કરી મુંબઈ આવતા હતા.
એ વખતની વાત પપ્પાજી કરતા હતા કે
'પાલઘર સ્ટેશને ગાડી ઘણીવાર ઊભી રહે.
ત્યાં ઘણા પેસેન્જર્સ ચા પીવે.
તો પેલા બે હરિભક્તો નાહ્યા વગર ચા ન પીવાય એવું કહી નીચે ઊતર્યા
ને
અમે બન્ને ભાઈઓએ ચા પીધી.
પેલા બે ગાડી ઊપડવાની વ્હીસલ વાગી ત્યારે આવીને બેસી ગયા.'
આ વાત અમે સાંભળતા હતા ત્યારે દિલીપભાઈ બેઠા હતા.
પપ્પાજીએ વાત પૂરી કરી ત્યારે હું બોલી કે
'પેલા બે હરિભક્તો આગળ જઈને પતાવી આવ્યા હશે.'
આ સાંભળીને દિલીપભાઈ ઊછળીને હસી પડયા ને બોલ્યા કે *'તમે સિક્સર મારી.'*
ગુરૂજીએ યોગીજી મહારાજ પાસે પણ બહુ જ લાડ લડયા છે.
એક વખત દિલીપભાઈ યોગીબાપા પાસે બોચાસણ ગયા હતા.
ત્યાં બ્રાહ્મણોએ પીરસવાનું હતું.
બાપાએ કહ્યું કે, *દિલીફભાઈ પીરસવા જાવ.*
ત્યારે દિલીપે કહ્યું કે, *બાપા! મેં જનોઈ નથી પહેરી.*
બાપાએ તરત કોઠારીને કહ્યું કે
'કોઠારી મહારાજ, આ દિલીફની જનોઈ હમણાં જ તૂટી ગઈ,
એટલે બીજી નવી જનોઈ આપો.'
દિલીપ તરત હસી પડયો ને જનોઈ પહેરીને પીરસવા લાગ્યો.
યોગીબાપા મુંબઈ પધારે ત્યારે
દિલીપભાઈ રોજ સવારે પૂજા વખતે મોગરાનો હાર લઈને પ્હોંચી જાય.

સાંજે દર્શને જાય ત્યારે બાપા કહે, *સવારે કેમ ન્હોતા આવ્યા ?*
ત્યારે દિલીપ કહે કે *બાપા હું આવ્યો હતો*
ને
બાપા કહે *ન્હોતા આવ્યા.*
આ રમત અઠવાડિયું ચાલી
ને
એક સાંજે બાપાએ રોજની જેમ કહ્યું કે, *ન્હોતા આવ્યા.*
ત્યારે દિલીપભાઈએ કહ્યું કે, *હા બાપા! ન્હોતો આવ્યો.*
બાપા હસીને બોલ્યા, *આયા'તા.*
ત્યાર પછી બાપાએ આ રમત બંધ કરી.
ગુરૂજીએ 'વિભૂતિ દર્શન' પુસ્તકમાં પાન નં ૮૩ ઉપર લખેલા લેખમાં
જેનું હેડીંગ 'ગુણાતીત દર્શન' છે, તેમાં સાત વિભાગ પાડયા છે.
તેના ત્રીજા વિભાગ કૃપાસાધ્યમાં પોતે ત્યાગાશ્રમ ગ્રહણ કર્યો એ ભૂલ કરી,
એવી વાત બાપા પાસે કરી;
ત્યારે બાપાએ એમને એકદમ અટકાવીને કહ્યું કે,
જુઓ તમે વિચાર ન કર્યો, ભૂલ કરી નાખી એ બરાબર.
પરંતુ મેં તમોને સાક્ષાત્ અક્ષરદેરીમાં
પૂ. શાસ્ત્રીજી મહારાજની સાક્ષીએ દીક્ષા આપી છે
તે શાસ્ત્રીજી મહારાજે તો ભૂલ નહિ જ કરી હોય ને ?
તેમણે તો બરોબર વિચાર કરીને જ દીક્ષા આપી હશે
કે આ મુકુંદ લાયક જ છે.
માટે જાઓ! હવે બીજો વિચાર ન કરશો.
આવા ગુરૂજી અત્યારે આશ્રિતોને પરમભાગવત સંત બનાવે તેવા સમર્થ થઈ ગયા.
એનો અનુભવ તમે કરો જ છો.
એનાથી હું અજાણી નથી, તેથી વધુ શું લખું?
એ જ **હંસાદીદી**ના જય સ્વામિનારાયણ.

[हिन्दी अनुवाद]

गुरुहरि पप्पाजी, काकाजी और बा के लाड़ले दिलीपभाई
ब्र.स्व. योगीजी महाराज के वरद् हस्तों साधु की दीक्षा लेकर
बिना किसी शर्त के ब्र.स्व. काकाजी की शरण में,
सर्वभाव से समर्पित होकर अनेक मुक्तों के जीवनप्राण बन कर
भारत की राजधानी दिल्ली को तीर्थत्व देते हुए बेताज बादशाह बन गए।
पूर्वाश्रम के समय एक बार गुरुजी **ताड़देव** काकाजी के निवास में

जिसे योगीजी महाराज **'अक्षरधाम का तख़्त'** कहते, वहाँ आए थे;
तब उन्होंने पप्पाजी को कहा था कि *'बाबु काका, आप मुझे जँचते नहीं हो।'*
तब पप्पाजी ने कहा था कि *'लेकिन, तू मुझे जँचता है न!'*
ऐसा वार्तालाप करने वाले,
अनादि मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी जैसी मुखाकृति धारण करने वाले
असाधारण बुद्धि के धारक,
निर्मल, निर्दोष आँखों वाले,
आत्मस्पर्शी वाणी का प्रवाह जिनके मुख से बहता है,
जिन्होंने काकाजी – पप्पाजी की प्रसन्नता पाने के लिए
भारत की राजधानी दिल्ली जाने की आज्ञा बिना कुछ सोचे शिरोधार्य की है,
योगीजी महाराज के लाड़ले 'दिलीफ',
सोनाबा जिसे बहुत प्यार में **'रुठी राधा'** कहतीं
और
अपने शिष्यों के जीवनप्राण गुरुजी साधु मुकुंदजीवनदासजी के अमृतपर्व पर
हे भगवान स्वामिनारायण! आपके पुनीत चरणों और पावन कानों में
हम सभी की प्रार्थना है, विनती है –
महाराज! गुरुजी को निरामय रखना जिससे उनकी शताब्दी का आनंद
सभी मुक्त उनके प्रत्यक्ष सान्निध्य में प्राप्त कर सकें।
ऐसी धन्यता का अनुभव करवाने का अनुग्रह करनाजी।
उनकी छोटी काया में स्नेहभरा हृदय समाया है।
उनके केश रहित मस्तक में असाधारण महात्म्य सिद्ध हो गया है।
इसलिए उनकी वाणी सुनने और जीव में उतारने जैसी लगती है
और
स्मृति में समा जाती है, मौके पर याद आ जाती है।
एक बार पप्पाजी का प्रागट्य दिन मनाया जा रहा था।
तब गुरुजी ने प्रवचन करते हुए कहा था कि
'पप्पाजी कई बार ऐसा कहते हैं कि मैं तुम्हारा वकील हूँ,
उसका कारण यह है कि जज को बंधी हुई तनख्वाह मिलती है
इसलिए उसकी आय सीमित होती है
और
वकील तो खुद जितने केस लड़ता है उतनी कमाई होती है।
अतः वह ज्यादा संपत्तिवान होता है।'
गुरुजी के ये शब्द मैं अभी भी भूली नहीं हूँ।
और... कुछ टेढ़ा-मेढ़ा हो, तो वह गुरुजी को बहुत पसंद आ जाता है।

दिल्ली २०१० TM© राष्ट्रमंडल खेल

एक बार पप्पाजी के साथ दिलीपभाई
मुंबई–कांदिवली में रामजीकाका के घर गए थे।
पप्पाजी रामजीकाका के साथ झूले पर बैठे थे।
रामजीकाका पैर से पींग देकर झूला झुला रहे थे।
अचानक ऐसा झटका लगा कि झूले का एक सरिया निकल गया;
सो पप्पाजी और रामजीकाका गिर पड़े।
यह देख कर दिलीपभाई इतना हँसे कि
उनकी आँखों में से पानी निकलने लगा।
यह बात पप्पाजी ने घर आकर करी कि
दिलीप इतना हँसा– इतना हँसा कि उसे देख कर मुझे भी बहुत ही हँसी आई।
यह बात करते-करते पप्पाजी भी खूब हँसे
और
उनकी आँखों में से भी पानी निकलने लगा।
१९६२ में जब घनश्याम अमीन १२ वर्ष का था,
उसका टॉन्सिल्स का ऑपरेशन नायर हॉस्पिटल में करवाया था।
उसे जो दाखिल करने गया था,
उसने घनश्याम की उम्र तेरह वर्ष लिखवाई थी,
इसलिए उसे एडल्टस के वोर्ड में दाखिल करना पड़ा।
वहाँ अलग-अलग प्रकार के ऑपरेशन वाले बड़ी उम्र के रोगियों को देख कर वह बहुत डर गया।
पप्पाजी ने मुझे कहा कि *तुम घनश्याम को देख आओ। यह दिलीप तुम्हारे साथ आएगा।*
सो हम दोनों हॉस्पिटल में गए।
अभी तो हॉस्पिटल के कम्पाउन्ड में पहुँचे ही थे कि मेरी नज़र ऊपर गई;
तो घनश्याम तो वोर्ड के बरामदे में खड़ा था।
उसकी रोई हुई आँखें देख कर मुझे दया आ गई।
मैंने दिलीपभाई को पूछा कि *दिलीपभाई क्या करेंगे?*
हम दोनों ने सोच लिया कि इसे घर ही ले जाएं।
सो दिलीपभाई टॅक्सी लेने के लिए दौड़े
और
मैंने घनश्याम को इशारे से समझाया कि तेरे कपड़े और पानी का प्याला लेकर नीचे आ जा।
एक तरफ वह नीचे आ गया
और
दूसरी ओर दिलीपभाई टॅक्सी लेकर आ गए।
हम किसी भी डॉक्टर को बताए-करे बिना घनश्याम को घर लेकर आ गए।
एक बार काकाजी, पप्पाजी और अन्य दो हरिभक्त जो सत्संग में बड़े माने जाते थे,

वे गोंडल में शरदपूर्णिमा का उत्सव करके मुंबई वापिस आ रहे थे।
उस समय की बात करते हुए पप्पाजी बोले कि
'पालघर स्टेशन पर गाड़ी काफी देर तक खड़ी रहती थी।
वहाँ कई पॅसेन्जर्स चाय पीते थे।
वे दोनों हरिभक्त तो स्नान करे बिना चाय नहीं पीते – ऐसा कह कर नीचे उतर गए
और
हम दोनों भाइयों ने चाय पी ली।
गाड़ी चलने की सीटी बजी तब वे दोनों आकर बैठ गए।'
यह बात हम जब सुन रहे थे, तब दिलीपभाई भी वहाँ बैठे थे।
पप्पाजी ने बात पूरी की, तब मैं बोली कि
'वे दोनों हरिभक्त भी आगे जाकर सब निपटा कर आए होंगे।'
यह सुन कर दिलीपभाई उछल कर हँस पड़े और बोले कि *'तुमने तो सिक्सर मारा।'*
गुरुजी ने योगीजी महाराज से खूब लाड़ पाए हैं।
एक बार दिलीपभाई योगीबापा के पास बोचासण गए थे।
वहाँ ब्राह्मणों को परोसना था।
बापा ने कहा कि *दिलीफभाई परोसने जाओ।*
तब दिलीपभाई ने कहा कि, *बापा! मैंने जनेऊ नहीं पहनी है।*
बापा ने तुरंत कोठारी को कहा कि
'कोठारी महाराज, ये दिलीप की जनेऊ अभी ही टूट गई,
सो दूसरी नई जनेऊ दे दो।'
दिलीप तुरंत हंस पड़े और जनेऊ पहन कर परोसने लगे।
योगीबापा जब मुंबई पधारते तब
दिलीपभाई रोज सुबह पूजा के समय मोगरे का हार लेकर पहुँच जाते।
शाम को दर्शन करने जाते तब बापा कहते– *सुबह क्यों नहीं आए थे?*
तब दिलीप कहते कि *बापा, मैं आया तो था।*
और
बापा कहते कि *नहीं आए थे।*
यह जेस्चर एक सप्ताह तक चला
और
एक शाम को बापा ने रोज की तरह कहा कि *नहीं आए थे।*
तब दिलीपभाई ने कहा कि *हाँ बापा! नहीं आया था।*
बापा ने हँस कर कहा, *आए थे।*
उसके बाद बापा ने वह जेस्चर बंद कर दिया।
'विभूति दर्शन' पुस्तक में पृष्ठ नंबर ८३ पर लिखे लेख में

जिसका हेडिंग 'गुणातीत दर्शन' है, उसमें सात विभाग हैं।
उसके तीसरे विभाग कृपासाध्य में त्यागाश्रम ग्रहण करके उन्होंने भूल की है,
ऐसी बात बापा के पास गुरुजी ने जब की;
तब बात काटते हुए बापा एकदम बोले –
देखो, तुमने सोचा-करा नहीं, भूल कर दी – वह ठीक है।
परंतु मैंने तुम्हें साक्षात् अक्षरदेरी में
पू. शास्त्रीजी महाराज की साक्षी में दीक्षा दी है;
वो शास्त्रीजी महाराज ने तो भूल नहीं ही करी होगी न?
उन्होंने तो ठीक सोच-समझ करके ही दीक्षा दी होगी
कि यह मुकुंद लायक ही है।
सो, जाओ! अब दूसरा विचार नहीं करना।
ऐसे गुरुजी अब आश्रितों को परम भागवत संत बनाएं – ऐसे समर्थ हो गए।
उसका अनुभव आप करते ही हैं।
यह बात मुझसे छिपी नहीं है, सो विशेष तो क्या लिखूँ?
यही **हंसा दीदी** के जय स्वामिनारायण!

✡✡✡

सौरभ - २०

સ્વામિશ્રીજી

૨૪-૭-૧૦

।। જય પપ્પાજી ।।
દિવ્ય આનંદી દીદી!
...દિવ્ય ગુરૂજી-મુકુંદજીવનસ્વામિજીના અમૃતપર્વે કાંઈક
અમૃતબૂંદ પામવાની ઝંખનાથી લખવા બેઠી છું.
...પ્રભુસ્વરૂપોનો મહિમા જ એવો છે –
જે અંગ કે કિનારો પકડીને આગળ ચાલવા માંડીએ, તેનો અંત જ ન આવે.
જે ગુણ કે ક્રિયાનું મૂલ્યાંકન કરીએ તે તો અંતે અમૂલ્યમાં જ પરિણમે છે.
...બાકી એમનું જ કાર્ય-'તમે ને સૌ ભક્તો' તે જ સાચો તેમનો જીવંત મહિમા છે.
અને તેના વિશેના વર્ણન કરવા તે જ સાચું ગરિમાગાન છે!
છતાં પણ –
'ગુરૂજી' શબ્દ અનાદિકાળથી હિન્દુધર્મમાં પાયાથી ઉદ્ભવેલો છે.
એવા અનાદિ શબ્દને ધારણ કરીને, **તે શબ્દને 'યથાર્થ' વર્તનનું ગૌરવ આપનાર છે ગુરૂજી!**
પૂ. મુકુંદજીવનસ્વામિજી!
ગુરૂજી એટલે...
ગુમાન ત્યજી – ત્યજાવી,
રૂહ સુધી પ્હોંચનાર,

જીવન આધાર– દાતાર.

પોતે સ્વયં ગુમાન ત્યજે ને સૌને માન આપે ને સૌને મોટાં દિલથી માનીને પોતે દાસભાવે વર્તે. તેથી જ ગુણાતીત સમાજમાં તેઓને યથાર્થ 'ગુરૂજી' સંબોધન આપવામાં આવે છે. **ગુરૂહરિ પપ્પાજી કહેતા– *'મુકુંદજીવન મારો દીકરો !'*** તો એવા પરમ પિતા જેને મળ્યા હોય, તેની પાસે કેવી અદ્‌ભુત અક્ષરધામની સુખ, શાંતિ ને આનંદની મૂડી હોય! વારસો હોય!

દિવ્ય સોનાબા કહે *'મુકુંદજીવન તો મારો દીકરો !'* તો એવી પરમ માતા જેને મળી હોય, તેની પાસે કેવી અદ્‌ભુત ગુણાતીત પ્રીતિ ને ભક્તિની મૂડી હોય! તે વારસો તો જીનેટીકલી જ મળ્યો હોય ને! soul to soul...

તો દિવ્યસ્વરૂપ પ.પૂ. કાકાજીને સાંગોપાંગ ધારીને, એમનો પૂર્ણ મનોરથ ઝીલીને, અખંડ આનંદ ને મસ્તીનો ફુવારો વહાવનારા આ દિવ્ય ગુરૂજીને સંભારતા જ અદ્‌ભુત મહામૂલો આનંદ ને 'સંબંધે જ સ્વરૂપ' માનવાની દ્દષ્ટિ ખીલી ઊઠે છે.

એવાં આપણા બ્રહ્માનંદી ગુરૂજી–
દેહ છતાંયે દેહાતીત,
ભાવ છતાંયે ભાવાતીત,
શબ્દ છતાંયે શબ્દાતીત,
નીરવ છતાંયે સભરતાભર્યા,
મૌન છતાંયે અંતરે ઉત્તર દેનારા,
હસતાં છતાંયે સાધકોની કસર તરફ અખંડ ગંભીર રહેનારા,
જ્ઞાન ન વહાવે છતાંયે 'પરમ'જ્ઞાની
અને એ 'પરમ જ્ઞાન' કયું ?
સ્વામિનારાયણ ભગવાન સર્વોપરિ છે.
સ્વામિનારાયણ મંત્ર સર્વોપરિ છે.
સ્વામિનારાયણના અલ્પ સંબંધવાળા મહાન મુક્તો જ છે.
અક્ષર પુરૂષોત્તમની નિષ્ઠાવાળો જીવ પ્રગતિ કરનારો પરમ ચૈતન્ય જ છે.
શાસ્ત્રીજી મહારાજના આશ્રિત સર્વે શૂરવીર ને દૃઢ આશરાવાળા જીવો છે.
યોગીજી મહારાજના દર્શન માત્રે સર્વ જીવો પરમ એકાંતિક બને છે.
કાકાજી મહારાજના સંબંધમાત્રે સર્વ કોઈ અક્ષરઅમૃત પામે છે.
પપ્પાજી મહારાજના દૃષ્ટિમાં આવ્યો તે જીવ શાશ્વત્ સુખ પામ્યો જ સમજવો.
શ્રી સોનાબાની પ્રીતિમાં જે ડૂબ્યો તે પરમ ભાગવત સંત બનીને જ રહેવાનો!
શ્રી હરિપ્રસાદસ્વામિજીની આજ્ઞામાં જે મંડયો તે જીવનમુક્ત બન્યો જ સમજવો.
શ્રી અક્ષરવિહારીસ્વામિજીની નિશ્રામાં જે આવ્યો તે અક્ષરસુખ પામીને જ રહ્યો સમજવો.
પૂ. સાહેબજી મહારાજના યોગમાં જે આવ્યો તે 'બ્રહ્મજયોતિ' પામીને પરમ સુખીયો જ થવાનો!
આવી 'શ્રી' અને 'શુભ' ભાવના તેમનાં રોમેરોમમાંથી નિરંતર વહે છે.
જે જે તેની સેવા કરે ને જે જે તેનો ગુણ લે, જે જે તેનું શરણ લે, તે બધાંને ગુરૂજી આત્મીય બનાવી,

'સ્વ' મુકાવી સેવામાં અહોભાવ કરાવી-ગરજુ બનાવીને દિવ્યભાવમાં રહેતો કરે જ છે!
ગુરૂજીની પરમ આજ્ઞા કે ઈચ્છા... 'યોગી પરિવારમાં દિવ્ય-આત્મીય કૌટુંબિકભાવ...'
એ અદ્ભુત-પારલૌકિક આજ્ઞા તરફ એમનાં સર્વે ભક્તોની નિરંતર દૃષ્ટિ છે... અને એ જ એમની પરમ મહાનતા. અતિ પરમ ચેતનાશક્તિ.
આજનાં અમૃતપર્વે એવી જ નિશદિનની અમ સૌની ભાવના-ઝંખના બની રહે તેવી નમ્ર પ્રાર્થના છે.
સાધન વિના સંબંધે જ સર્વની પ્રગતિ કરાવનારા... હસતાં રમતાં હં...
શ્રી ગુરૂજીની જય હો! જય હો! જય હો...

– પૂ. ડૉ. નીલમબેન, ગુણાતીત જ્યોત – વલ્લભવિદ્યાનગર

[हिन्दी अनुवाद]

२४-१०-'१०

स्वामिश्रीजी

।। जय पप्पाजी ।।
दिव्य आनंदी दीदी!
...दिव्य गुरुजी-मुकुंदजीवनस्वामिजी के अमृतपर्व के निमित्त कुछ अमृतबूंद पाने की अभिलाषा से लिखने बैठी हूँ।
...प्रभुस्वरूपों की महिमा ही ऐसी है –
जिस अंग या छोर को पकड़ कर चलने लग पड़ते हैं, उसका अंत ही नहीं आता।
जिस गुण या क्रिया का मूल्यांकन करते हैं, वह तो अंत में अमूल्य ही रहता है।
...बल्कि उनका कार्य – 'आप और सभी भक्त' ही उनकी सच्ची जीवंत महिमा है और उसी का वर्णन करना ही सच्चा गरिमागान है!
फिर भी –
'गुरुजी' शब्द का उद्भव अनादि काल से हिन्दू धर्म की नींव से हुआ है।
ऐसे अनादि शब्द को धारण करके, **अपने वर्तन से उस शब्द को 'यथार्थ' गौरव देने वाले हैं गुरुजी!**
पू. मुकुंदजीवनस्वामिजी!
गुरुजी यानि...
स्वयं अपने अहं को छोड़ कर एवं अन्यों का छुड़वा कर,
रूह तक पहुँचने वाले,
जीवन आधार – दातार।
स्वयं अपना गुमान छोड़ कर सभी को मान देते हुए, दिल से सभी को बड़ा मान कर, खुद दासभाव से वर्तते हैं। तभी तो गुणातीत समाज में उन्हें 'गुरुजी' कह कर यथार्थ संबोधन करते हैं। ***गुरुहरि पप्पाजी कहते – 'मुकुंदजीवन मेरा बेटा!'*** ऐसे परम पिता जिन्हें मिले हों, उनके पास अक्षरधाम के सुख, शांति और आनंद की कैसी अद्भुत पूँजी होगी! विरासत में होगी!
दिव्य सोनाबा कहतीं 'मुकुंदजीवन तो मेरा बेटा!' ऐसी परम माँ जिसे मिली हो, उसके पास गुणातीत प्रीति और भक्ति की कैसी अद्भुत पूँजी होगी! वह तो जीनेटीकली ही विरासत में मिली होगी न! soul to soul...

दिव्यस्वरूप प.पू. काकाजी को सांगोपांग धार कर, उनका मनोरथ पूर्णतया झेल कर, अखंड आनंद और मस्ती का फुहारा उड़ाने वाले ऐसे दिव्य गुरुजी को याद करते ही बहुमूल्य अद्भुत आनंद और 'संबंध से ही स्वरूप' मानने की दृष्टि मिल जाती है।

ऐसे हमारे ब्रह्मानंदी गुरुजी–
देह में रहते हुए भी देहातीत,
भावविभोर होते हुए भी भावातीत,
बोलते हुए भी शब्दातीत,
शांत रहते हुए भी प्राप्ति की मस्ती से भरे,
मौन होकर भी अंतर में उत्तर देने वाले,
हँसमुख, फिर भी साधकों की कसर की ओर सदैव कड़े रहने वाले,
उपदेश न देते हुए भी 'परम' ज्ञानी
और... वह 'परम ज्ञान' कौन-सा?
भगवान स्वामिनारायण सर्वोपरि हैं।
'स्वामिनारायण मंत्र' सर्वोपरि है।
स्वामिनारायण के अल्प संबंध वाले महान मुक्त ही हैं।
अक्षरपुरुषोत्तम की निष्ठा वाले जीव प्रगति करने वाले चैतन्य ही हैं।
शास्त्रीजी महाराज के आश्रित सभी शूरवीर और दृढ़ आसरे वाले जीव हैं।
योगीजी महाराज के दर्शन मात्र से सभी जीव परम एकांतिक बनते हैं।
काकाजी महाराज के संबंध मात्र से हर कोई अक्षर अमृत पाता है।
पप्पाजी महाराज की दृष्टि में जो जीव आया, उसने शाश्वत् सुख प्राप्त किया ही समझना!
श्री सोनाबा की प्रीति में जो डूबा, वह परम भागवत संत बनेगा ही!
श्री हरिप्रसादस्वामिजी की आज्ञा में जो लगा रहा, वह जीवनमुक्त बना ही समझना।
श्री अक्षरविहारीस्वामिजी की निश्रा में जो आया, उसने अक्षरधाम का सुख पाया ही समझना।
पू. साहेबजी महाराज के योग में जो आया, वह 'ब्रह्मज्योति' पाकर परम सुखी होगा ही!
ऐसी 'श्री' और 'शुभ' भावना उनके (प.पू. गुरुजी के) रोम-रोम से निरंतर बहती है।

जो-जो उनकी सेवा करे, जो-जो उनमें सद्भाव रखे और जो-जो उनकी शरण ले, उन सभी को गुरुजी 'आत्मीय' बना कर, 'स्व' छुड़वा कर अहोभाव से सेवा में जोड़ कर-गरजु बना कर दिव्यभाव में रहता करते ही हैं!

गुरुजी की परम आज्ञा या इच्छा है... **'योगी परिवार में दिव्य-आत्मीय कौटुंबिकभाव...'**

उनकी इस अद्भुत-पारलौकिक आज्ञा की ओर उनके सभी भक्तों की निरंतर दृष्टि है, और... यही उनकी परम महानता, अति परम चेतनाशक्ति है।

उनके अमृतपर्व निमित्त हम सभी की निशदिन ऐसी ही भावना-लगन बनी रहे ऐसी नम्र प्रार्थना है।

बिना साधन के 'संबंध से ही' सभी की प्रगति करवाने वाले... हँसते-खेलते हं...

श्री गुरुजी की जय हो! जय हो! जय हो...

– पू. डॉ. नीलम बहन, गुणातीत ज्योत-वल्लभविद्यानगर

सौरभ - २१

स्वामिश्रीजी

...प.पू. गुरुजी की मुझ पर पहले से ही अतिशय कृपा रही है। प.भ. चंद्रकांत वाघ (मीरां रोड मुंबई वाले) और मैं मिलैट्री की यूनिट में साथ-साथ थे एवं आपस में मित्रता भी थी, जो आज भी वैसी ही घनिष्ठ है... १९८३ में एक बार उनके पास गुरुहरि योगीजी महाराज की मूर्ति देख कर मैंने उनसे सत्संग के बारे में पूछा, तब वे मुझे प.पू. गुरुजी से मिलवाने ले आए। **प.पू. गुरुजी से मिलने पर मुझे ऐसा लगा ही नहीं कि पहली बार मिल रहा हूँ।** उनका व्यवहार ऐसा था कि मानो हम पहले कई बार मिल चुके हों और... मेरी पत्नी छाया का कोई भाई नहीं है; प.पू. गुरुजी ने उसे अपनी बहन बना कर 'भाई' की कमी भी पूरी कर दी।

...प.पू. काकाजी जब भी दिल्ली आते, तो प.पू. गुरुजी मुझे बुलाते और उनकी सेवा करने के लिए मुझे भेजते। मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी की द्विशताब्दी के कार्यक्रमों में प.पू. गुरुजी मुझे साथ लेकर गए और हरिधाम, सांकरदा, विद्यानगर, गोंडल, जूनागढ़ इत्यादि अनेक स्थलों पर मंदिरों के दर्शन कराए। इस ट्रिप के दौरान मुझे **प.पू. आनंदी दीदी** के साथ जुड़ने का सौभाग्य भी मिला।

यूँ सत्संग से जुड़ते गए और जब भी छुट्टियाँ होतीं, तो प.पू. गुरुजी के पास आ जाते। वे इतना प्रेम करते कि घर-बार, माँ-बाप, भाई-बहन कोई भी याद नहीं आता... अकसर सुना है कि साधु तुम्हें अपना बनाने के लिए खूब प्रेम देते हैं। इसी प्रकार प.पू. गुरुजी ने मुझे खूब निश्चल प्रेम दिया और मुझे अपना बनाने के लिए अथक् प्रयत्न किए। यह सब उनकी मुझ पर अनहद् कृपा ही कही जाए।

१९८५ में एक बार मैं और छाया दिल्ली मंदिर आए थे। तब **प.पू. काकाजी** अक्षरनिवासी श्री जुगलकिशोर लालाजी के घर पर विराजमान थे। हम दोनों ने उनसे वापिस जाने की आज्ञा माँगी, तो उन्हों**ने अपने हाथ में ड्राईफ्रूट भर कर हम दोनों को उसका प्रसाद दिया और कहा कि गुरुजी की सेवा करना।** उस समय मैं प.पू. काकाजी की बात का अर्थ समझ नहीं पाया था।

७ मार्च १९८६ को प.पू. काकाजी ने स्थूल देह का त्याग किया। **१९८७ में प.पू. गुरुजी ने मुझे आर्मी की सर्विस छोड़ने की आज्ञा की।** उनकी आज्ञा के अनुसार मैंने डिस्चार्ज ऑन एक्सट्रीम कम्पशनेट ग्राउंड के लिए आवेदन पत्र लिखा। यह पत्र मैंने पहले प.पू. गुरुजी को दिखाया, तो उन्होंने उसमें प.पू. काकाजी का प्रसादी का शब्द 'डिलिजन्टली' लिखवाया।

आर्मी से डिस्चार्ज प्राप्त करने के लिए मेरे आवेदन में कई विसंगतियाँ थीं जैसे–

१. दिल्ली में मेरे स्थानिक पते का कोई रॅकार्ड नहीं था। आवेदन पत्र में दिल्ली का जो पता भेजा, वह तो अपने मंदिर का ही था।

२. आवेदन पत्र में मैंने लिखा था कि मेरी माताजी को टी.बी. है, सो उनकी देखभाल के लिए मुझे डिस्चार्ज चाहिए। अतः माताजी का मॅडिकल सर्टिफिकेट पत्र के साथ में लगाया था, परंतु वह मॉयो अस्पताल-नागपुर का था, जबकि मैं तो दिल्ली रहना चाहता था।

३. आर्मी में मेरा बॉन्ड २० वर्ष के लिए था, जबकि उस समय मेरी सर्विस को केवल १५ वर्ष और ७ महीने ही हुए थे...

फिर भी, मेरी प्रार्थना स्वीकार कर ली गई और मुझे तुरंत प्रीमॅच्योर डिस्चार्ज दे दिया गया। मेरी युनिट में सभी को आश्चर्य हुआ कि यह कैसे हुआ। पर, असंभव को संभव तो प.पू. गुरुजी ने ही बनाया। दरअसल, आर्मी की नौकरी छुड़वा कर प.पू. गुरुजी मुझे मंदिर की सेवा में रखना चाहते थे, यह बात प.पू. गुरुजी ने प.भ. अविनाश चड्ढाजी को पहले ही बता दी थी। मंदिर की सेवा में आने के लिए मैंने घरवालों या मित्रों के किसी विरोध पर ध्यान नहीं दिया। साथ ही, मुझे सेवा में रखना था इसलिए नौकरी छुड़वा दी या छोड़नी पड़ी, ऐसे किसी भी प्रकार के हीन विचारों ने मुझे भविष्य में कभी परेशान नहीं किया। सच, इस विषय में प.पू. गुरुजी की मुझ पर विशेष कृपा रही... इससे भी अधिक प.पू. गुरुजी ने तब कहा था कि **प्रभाकर देश की सेना छोड़ कर नारायणी सेना में** भर्ती हो गया है। जिस दिन हम मंदिर के नज़दीक रहने आए, वह १२ जून का पवित्र दिन था।

इससे पहले, फरवरी १९८७ में मैं जब दिल्ली आया था, तब एक दिन सुबह महापूजा खत्म हुई और मुझे बुला कर **प.पू. गुरुजी ने** मेरे हाथ में जल देकर **कहा– *संकल्प कर कि तेरे दो बेटों में से एक मुझे देगा।* मुझ पर प.पू. गुरुजी की कितनी कृपा–अधिकार कि उन्होंने मुझसे बिना कुछ पूछे यह संकल्प करवाया।**

दिसंबर १९८७ के अंत तक मैं कलर्ड कपड़े पहनता था। एक दिन मुझे प.पू. गुरुजी ने अपने पास बुला कर कहा– *यह मंदिर के सेवकों की यूनिफार्म है और तुझे हमेशा यही पहननी है।* उसी पल से प.पू. गुरुजी ने मेरे भीतर से कलर्ड कपड़े पहनने का मानो मोह खत्म कर दिया। इतनी करुणा बरसाई कि कभी दूसरे कपड़े पहनने की इच्छा ही नहीं हुई।

मेरे पारिवारिक बंधन भी गुरुजी ने कृपा से खत्म कर दिए। पहले पिताजी को धाम ले गए। फिर माताजी और भाई-बहनों ने तो मान ही लिया कि अब यह हमारे हाथ नहीं आएगा। साथ ही मेरे मन में भी उन सभी के प्रति मोह खत्म हो गया। यह सब प.पू. गुरुजी की असीम कृपा से ही संभव हुआ।

१९९२ में मेरे ससुरजी खूब बीमार होने के कारण, हमारे पास इलाज करवाने के लिए दिल्ली आए थे। १३ जनवरी की शाम को प.पू. गुरुजी ने मेरी पत्नी छाया को बुला कर सेवक द्वारा कहलवाया– *अपने पिताजी की मुक्ति के लिए तुम भजन करो* और...साथ ही मंदिर में उपस्थित सभी मुक्तों से धुन करवाई। १४ जनवरी प्रातः ५ बजे तो मेरे ससुरजी शरीर से मुक्त हो गए। अपने पिता की मुक्ति के लिए भजन करवाना, यह तो प.पू. गुरुजी जैसे समर्थ साधु ही करवा सकते हैं।

ससुरजी का अंतिम संस्कार करके मैं मंदिर आया, तो प.पू. गुरुजी ने ३ फरवरी, प.पू. काकाजी के साक्षात्कार के उत्सव का कार्ड छपवाने के लिए कनाट प्लेस प्रेस में पेपर्स दे आने के लिए कहा... पिछले दो-तीन दिनों से मैं जागा हुआ था और थक कर चूर था। मैं मंदिर की एम्बेसेडर कार लेकर पेपर्स देने निकला। थकान के कारण पचकुइयां रोड पर मेरी आँख लग गई। करीब २०० मीटर तक गाड़ी चलती रही। अचानक मेरी आँखें खुलीं तो देखा कि गाड़ी ठीक चल रही थी!

मंदिर वापिस आया, तो प.पू. गुरुजी ने मुझे एक रुमाल दिया, जिस पर दिल-दिल-दिल लिखा था। देखा जाए तो सब कुछ उन्होंने किया, पर श्रेय मुझे दिया... मेरे ससुरजी ने अपनी अंतिम इच्छा के रूप में यह प्रार्थना की थी कि *मेरे शरीर की राख को प.पू. काकाजी की पुष्पसमाधि के पथ की मिट्टी में दबा देना, ताकि*

वहाँ आने-जाने वाले मुक्तों की चरणरज से मैं धन्य हो जाऊँ। इसी प्रकार करीब १६-१७ साल बाद मेरी सास का देहांत हुआ, तो मानो उनके अंतर की इच्छा जानते हुए प.पू. गुरुजी ने उनकी अस्थियाँ विशेष रूप से मंगवा कर प.पू. काकाजी की पुष्पसमाधि पर भजन करके मिट्टी में दबाने के लिए मुझसे कहा।

१९९७ में प.पू. गुरुजी के हार्ट का ऑपरेशन हुआ था। तब प.पू. गुरुजी के इलाज और आराम के हेतु से हम वहीं-मुंबई में रुके थे। १ फरवरी १९९८ को जब हम दिल्ली वापिस आए, तो दिल्ली के प.भ. वेदप्रकाशजी मुझसे मिलते ही कहने लगे कि प्रभाकरभाई आपने तो कमाल कर दिया। मेरे सपने में आकर मुझे ठीक कर दिया। मैं उनकी बातों को समझ नहीं पा रहा था, सो मैंने उनसे पूछा कि क्या बात है। उन्होंने बताया– *'मुझे सर्वाइकल की तकलीफ हुई थी। डेढ़-दो महीने इधर-उधर डॉक्टरों को दिखा कर बहुत इलाज करवाया, लेकिन आराम नहीं आया। सो, मैंने सोचा कि चलो मंदिर में प्रभाकरभाई को बताते हैं। मंदिर आया तो पता चला कि प.पू. गुरुजी की बाईपास सर्जरी हुई है और आप भी उनके साथ मुंबई गए हुए हैं। मैं हताश हो गया और ठाकुरजी के दर्शन-प्रार्थना करके घर चला गया। उसी रात मेरे सपने में प.पू. गुरुजी आपको लेकर आए और प.पू. गुरुजी ने आपको आज्ञा की कि इसका एक्युप्रेशर कर दो। दूसरे दिन जागते ही मैंने महसूस किया कि मैं बिल्कुल ठीक हो गया हूँ!'*

यह प्रसंग आज भी याद करते हुए सहज ही मुख से निकलता है कि *करते हो आप स्वामी (काका), मेरा नाम हो रहा है...*

२४ अगस्त, १९९९ राखी के शुभ दिन प.पू. गुरुजी ने मेरे बड़े बेटे प्रशांत को साधु बनाने का निश्चय किया। यह बात करने के लिए मुझे और छाया को बुलाया, तब प.पू. दीदी भी हमारे साथ थीं। १९८७ में प.पू. गुरुजी ने मुझ से जो संकल्प करवाया था, वह पूरा होने का वक्त आ पहुँचा था। एक माँ जब अपने बेटे को साधु बनाने के लिए सौंपती है, तो स्वाभाविक है कि कुछ वक्त तो लेती ही है। परंतु, सिर्फ आधे घंटे में ही प.पू. गुरुजी की बातें सुन कर छाया इस बात के लिए राजी हो गई। इस प्रकार १९८७ में किए गए संकल्प को प.पू. गुरुजी ने साकार रूप दे दिया।

२००७ के सितंबर महीने में मेरी बेटी अनुराधा डिलीवरी के लिए हमारे पास आई थी। वो अस्पताल में बहुत परेशानी में थी। मैंने प.पू. गुरुजी को सारी सूचना दी। १० सितंबर को डॉक्टर ने इमरजन्सी में उसका ऑपरेशन किया और माँ-बेटी दोनों ठीक रहे। इस प्रसंग के एक हफ्ते के बाद साहिबाबाद के प.भ. आर.के. अग्रवालजी मंदिर आए। उस समय प.पू. गुरुजी गुजरात एपार्टमेन्ट्स जा रहे थे। मैं गेट के पास खड़ा था। प.पू. गुरुजी के चले जाने के बाद प.भ. आर.के. अग्रवालजी ने बताया कि *पिछले शुक्रवार यानि ८ तारीख को प.पू. गुरुजी उनके सपने में आए थे। सपने में मैं उनसे कुछ बात करूँ कि प.पू. गुरुजी बोले – 'मैं अनु के केस में व्यस्त हूँ, तुम तीन के दिन बाद मंदिर आना।'*

व्यावहारिक ढंग से देखा जाए तो अनु जब अस्पताल में थी, उस दौरान प.पू. गुरुजी ने हम से कुछ भी नहीं कहा, न ही अनु के लिए कोई मेसेज भिजवाया था। लेकिन प.भ. अग्रवालजी की बात सुन कर एहसास हुआ कि प.पू. गुरुजी को अनु की कितनी चिंता होगी कि अन्य सभी बातें-काम छोड़ कर वे उसकी रक्षा करने के लिए ही मानो बैठे थे!

१९९७ में हार्ट के ऑपरेशन के बाद प.पू. गुरुजी के साथ जब हम ब्रह्मज्योति पर ठहरे हुए थे तब किसी ने मुझे सुझाव दिया कि जब सत्पुरुष बीमारी ग्रहण करते हैं, तो उनकी भी देखभाल बच्चों की तरह ही करनी पड़ती है। जब यह बात प.पू. गुरुजी के प्रकाश में आई तो उन्होंने मुझसे कहा–

'सत्पुरुष चाहे बीमार हो या स्वस्थ–उनकी सेवा में कोई मर्यादा नहीं छोड़नी चाहिए। स्वरूप-स्वरूप ही होता है।'

मंदिर की सेवा में आने के बाद भी प.पू. गुरुजी ने मुझ पर बहुत परिश्रम किया है। मेरी कितनी ही गल्तियों को उन्होंने नज़रअंदाज़ किया। साथ ही सदा मेरी प्रगति कैसे हो और सभी की निगाह में मेरी इज्जत कैसे बढ़े, इसके लिए अपनी प्रतिष्ठा या अपनी उच्च कक्षा की तनिक भी परवाह किए बिना उन्होंने जो अथक् प्रत्यन किए, उसके लिए कोटि-कोटि धन्यवाद, धन्यवाद, धन्यवाद...

– प्रभाकर राव, दिल्ली

✡✡✡

'नींव में हो आप समाए, महल भले दिखें आलीशान' के मर्म को प्रकट करता ताड़देव मंदिर का हॉल...

अशोकविहार-३ में किराए की कोठी ए-१०३ में सत्रह साल, सात महीने रहने के बाद १९९३ में प.पू. गुरुजी ने अर्धनिर्मित मंदिर में रहना शुरू किया। १९९४ की ३ फरवरी को मंदिर के हॉल में श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज सहित गुणातीत स्वरूपों की मूर्तियाँ स्थापित की गईं, परंतु तब हॉल में केवल संगमरमर का सिहांसन ही बनवा पाए थे। हॉल की छत एवं दीवारों पर सिर्फ प्लास्टर ही हुआ था... तत्पश्चात्, १९९७ में अक्षरज्योति के भवन की नींव रखी गई और २००७ में भवन निर्माण का कार्य पूरा हुआ! इस दौरान मंदिर के निर्माण का कार्य तो बंद ही रहा, क्योंकि प.पू. गुरुजी की ऐसी इच्छा थी कि भगवान भजती बहनों के लिए रहने का स्थान पहले बन जाए। आख़िरकार, २००९ की २६ जुलाई को वह शुभ दिन भी आया, जब मंदिर के अधूरे हॉल का निर्माण फिर से शुरू किया गया।

दिल्ली मंदिर से खूब अपनेपन से जुड़े मुंबई के **प.भ. अनिलभाई मणिक के सुपुत्र प.भ. मिलनभाई** जो एक सिविल इंजीनियर और इंटीरियर डिज़ाईनर हैं एवं प.पू. गुरुजी जब अशोकविहार रहने आए, तब से मानो प.पू. गुरुजी की परछाईं बने रहने की भावना से जुड़े **प.भ. नवीनभाई के सुपुत्र प.भ. आशिष** ने **पू. अक्षरस्वामी को साथ में लेकर** हॉल के निर्माण की सेवा का कार्यभार संभाल लिया। तीनों ने मिलजुल कर-'एक' होकर दिन-रात देखे बिना, एक वर्ष में हॉल निर्माण का कार्य न केवल पूरा किया, बल्कि प.पू. गुरुजी के अंतर की प्रसन्नता प्राप्त कर ली!

पूरे एक वर्ष के बाद **२५ जुलाई २०१०, गुरुपूर्णिमा के** महामंगलकारी दिन **हॉल के उद्घाटन** की मंगल घड़ी आ गई। ताड़देव मंदिर के प्रवेश की सीढ़ियाँ फूलों एवं पीले व नारंगी रंग के गुब्बारों से सुसज्जित थीं। प.पू. गुरुजी के प्रति खूब लगाव से जुड़े आत्मीय वडील **श्री काशीरामभाई राणा साहेब** भी गुरुपूर्णिमा

का अपना कार्यक्रम रद्द करके इस मंगल अवसर के लिए, प.पू. गुरुजी के प्रति मानो अपनी भक्ति अदा करने के लिए, विशिष्ट रूप से आए। प.पू. गुरुजी, प.भ. राणा साहेब एवं कुछ मुक्त हॉल के प्रवेश द्वार पर पहुँचे... यहाँ सांकेतिक रूप से इंद्रधनुष के सात रंगों के सात रिबन लगाए हुए थे और अंत में आठवाँ सफ़ेद रंग का रिबन था। **'एमीटी युनिवर्सिटी' के मुखिया डाईरॅक्टर जनरल श्रीवास्तव साहेब** को साथ में लेकर **प.भ. प्रमीतभाई, प.भ. देवांगभाई, प.भ. अमित मदानजी, प.भ. धीरुभाई कापड़िया, प.भ. कमलदेवजी (जगरांव), पुराने जोगी प.भ. डॉ. अरुणभाई भट्ट (पुणे) एवं प.भ. पुनीतजी (पानीपत)** – इन सात मुक्तों ने सातों रंग के रिबन बारी-बारी से काटे और अंत में **पू. मल्कानी अंकल** द्वारा सफ़ेद रिबन खोले जाने के बाद सभी ने मंत्रोच्चार, धुन एवं पुष्पांजली करके पू. गुरुजी एवं श्री राणा साहेब के साथ हॉल में प्रवेश किया। इंद्रधनुष के इन सात रंगों और आठवें सफ़ेद रंग के रिबन के पीछे का मर्म निम्न प्रकार था –

*सूर्य की किरणों को विभाजित करें, तो सात रंगों का मेघधनुष बनता है। विधाता ने इन्हीं सात रंगों से सृष्टि को भरा है और इन सातों रंगों से 'VIBGYOR' (वीब्ज्यॉर) कॉईन्ड हुआ है। इन सात रंगों की अपनी-अपनी निजी पहचान है, पर अगर सभी अपनी-अपनी विशिष्ट पहचान को एक-दूसरे में मिला दें, तो वे सातों रंग विलीन होकर 'सफ़ेद' में परिवर्तित हो जाते हैं। ठीक, ऐसे ही गुणातीत समाज में हर रंग के – विविध स्वभाव व प्रकृति के मुक्त हैं, पर संत के माध्यम से वे अपना - अपना 'स्व' छोड़ कर एक-दूसरे से मिलजुल जाएं – एक हो जाएं, तो **ब्रह्मस्वरूप काकाजी** के शब्दों में **'स्वरूपलक्षी सुहृद्भाव' से जीता** एक **'आध्यात्मिक समाज-दिव्य समाज'** बनता है।*

*इसी भावना से सात विभूतियों ने इन एक-एक रंग के सात रिबन को **काट कर** दर्शाया कि सात आवरण भेद कर सात जड़ कोटियों को पार कर लेने पर, जैसे कि पू. मल्कानी अंकल ने आठवें रिबन को – यानि इन सभी के एकजुट होने पर बना 'सौहार्द' का 'सफ़ेद रिबन' – **खोल कर** दर्शाया कि भीतर की गाँठें खोल कर ही भगवदी के संग सुहृद्भाव से जीते हुए हम चिदाकाश में- **'अक्षरधाम'** में प्रवेश कर पाते हैं। इस रहस्य को उजागर करने के लिए हॉल के उद्घाटन का यह प्रोसीजर एक 'सिम्बॉलिक जॅस्चर' था।*

हॉल में सभी ने अपना-अपना स्थान लिया और महापूजा की शुरुआत होते ही वातावरण में दिव्यता छा गई और... प.पू. गुरुजी ने प.भ. आशिष एवं प.भ. मिलनभाई पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए दिल को छू जाती हॉल की सुंदरता के रहस्य को उजागर करते हुए बताया –

*इस कार्य की शुरुआत करने जा रहे थे, तब मैंने इन सेवकों को कहा था कि **यह हॉल तो अच्छा-सा बनाना है और बनेगा भी; परंतु यह सेवा करते हुए आप एक-दूसरों के और करीब आने चाहिएँ, ना कि – मतभेदों के कारण एक-दूसरे से और अंततः मुझसे – मंदिर से - दूर हो जाएँ। भूलना नहीं कि – मंदिर के ऐसे सारे क्रियायोग साथीमुक्तों से सुहृद्भाव बढ़ा कर, संत की प्रसन्नता प्राप्त कर लेने के हेतु से होते हैं और... हॉल की सेवा करते हुए इन सेवकों की सोच भले ही कभी अलग हुई होगी, लेकिन इनकी भावना थी कि गुरुजी में से जो आएगा, वही करना है; सो 'एक-मन' से***

उन्होंने जो 'सेवा' की उसी का यह परिणाम है और इसी वजह से इस हॉल में दिव्यता की अनुभूति हो रही है।

ठाकुरजी के हॉल का निर्माण करते हुए मानो हमारे प्रगट प्रभु – प.पू. काकाजी इन सेवकों के हृदयाकाश में विराजमान होकर प्रेरणा देते रहे!

दिल्ली के माहौल को देखते हुए हॉल में सारा काम लकड़ी का ही किया गया है। लकड़ी में हुई नक्काशी का सारा कार्य अमदावाद के **श्री भरतभाई मिस्त्री** ने किया है और उसके फ़िटिंग वगैरह के लिए कारीगर भी अमदावाद से ही आए थे। हॉल में चारों ओर प.पू. गुरुजी के निर्देशानुसार **'गुणातीत भावना' के मर्म** एवं **'गुणातीत समाज' के इतिहास** को दर्शाती मूर्तियाँ विवरण के साथ लगाई गईं हैं।

जूनागढ़ मंदिर में मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी ने धर्मशाला बनवाई थी... उसमें लकड़ी के ऊँचे-ऊँचे पिलर्स की नक्काशी इतनी सुंदर करवाई थी कि बिनसत्संगी लोग भी उसे विशेष रूप से देखने आते रहते और... उसे देख कर सब दाँतो तले उंगली दबा लेते... उनका मुँह खुला का खुला रह जाता। स्वामिश्री तो कई बार बोलते कि – ***'आ लक्कडकोटना दर्शन करवा बधां आवे छे, पण आ साधुना दर्शन कोई करतुं नथी।'***

आम लोगों की इसी नब्ज़ को परख कर, प.पू. गुरुजी ने ठाकुरजी का ये हॉल स्वयं अत्यधिक परिश्रम लेकर इसीलिए ऐसा आकर्षक बनवाया है कि बस देखते ही रहो और... एक-दूसरे से हॉल की अनुपम सुंदरता की बातें सुन कर लोग भले ही सिर्फ इसे देखने मात्र आए, पर अंदर आकर वे गुणातीत स्वरूपों, प.पू. काकाजी और प.पू. पप्पाजी की मूर्ति के दर्शन करेंगे और चित्रित प्रतिमाएँ एवं राईटींग्स द्वारा जानेंगे – **ओहो! गुणातीत समाज और उसके हर केन्द्र के सर्जन की नींव में हैं – काकाजी! इतना ही नहीं, श्री अक्षरपुरुषोत्तम संप्रदाय के समग्र विकासक्रम में भी प.पू. काकाजी का योगदान अनूठा रहा है! यूँ प.पू. काकाजी का एक 'दर्शन' होगा।**

प.पू. गुरुजी की तो हर एक क्रिया – चरित्र में एक यही उद्यम होता है कि किसी भी तरह प.पू. काकाजी द्वारा किए अनूठे परिश्रम से सभी परिचित होकर प्रभु से जुड़ें...

और... वाकई, हॉल का निरीक्षण करते ही – वर्षों पहले **पू. दासस्वामिजी** द्वारा प.पू. काकाजी के लिए रचित भजन की यह पंक्ति –

'पायामां पूरायो छे तुं, महेल भले आलीशान...'

अर्थात् – नींव में हो आप समाए, महल भले दिखें आलीशान – अपने आप कानों में गूँजने लगती है!

तो, प.पू. गुरुजी द्वारा हमारे लिए किए ऐसे अथक् छुपे परिश्रम को देखते हुए प.पू. काकाजी से अंतर से यही प्रार्थना है –

'मंदिर बनाव्युं आप बिराज्या, करवी शुं आराधना; हृदय मंदिरिये कायम बिराजो, भुलकांनी छे प्रार्थना...'

(गुरुपूर्णिमा के निमित्त प.पू. गुरुजी द्वारा की गई आशिषवर्षा का लाभ अगले अंक में...)

✡✡✡

13 मार्च 2010 – प.पू. गुरुजी के प्राकट्योत्सव की प्रातः सभा

प.पू. गुरुजी

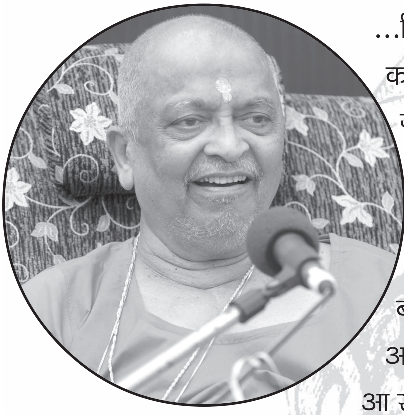

...पियुषभाई ने कहा कि गुरुजी अपने जन्मदिन पर हर साल आग्रह करके बुलाते हैं, बात एकदम सही है। हाँ, लेकिन एक बात इन्होंने गलत कही कि गुरुजी को अपना जन्मदिन मनाने का चाव नहीं है। लेकिन, हक़ीक़त में चाव है, पर वो इसलिए है कि इसी बहाने आप सब यहाँ आएँ। तकरीबन दो महीना पहले तो मेरा सर्क्युलर लेटर पहुँच जाता होगा कि आप टिकिट बुक करा लेना, ताकि आपके पास बहाना नहीं रहे कि टिकिट नहीं मिली... मैं यहाँ तक कहता हूँ कि आप टिकिट बुक करा लो। अगर बाद में संजोग ऐसे बन गए कि नहीं आ सकते, तो पच्चीस-तीस रूपए कट कर टिकिट कैन्सल हो जाएगी। लेकिन जब जाना हो, तो उसमें कोई रोड़ा बीच में नहीं आएगा। तो अगले साल आने के लिए भी आप लोग टिकिट अभी से बुक करा लेना। इस बीच में हो सकता है कि प्लेन वाले स्कीम निकाल दें कि एक रुपए में पहुँच जाओगे, तो तुम्हें फायदा होगा और जल्दी आ जाओगे, एक दिन यहाँ ज्यादा रहोगे...

मैं आप सबको बुलाता हूँ कि आप सब लोग यहाँ आओ, किसलिए ? वो मेरी बात खूब ध्यान से सुनना। मैंने बहुत टाईम पहले एक सेन्टेन्स पढ़ा था कि **कोई भी संस्था, कोई भी समाज अगर अपने सर्जक को भूल कर भले कितने ही ऊँचे आदर्श रख करके कार्य करेगा, लेकिन उसमें 'कौवत' नहीं रहेगा, हिन्दी में जिसे कहें कि ताक़त, शक्ति नहीं रहेगी। यह बात हमारे यहाँ बिल्कुल सही है। आज हम अभी बापा के मूलभूत सिद्धांत–आदर्श 'संप, सुहृद्भाव और एकता' की जो बात करते हैं, वह सिद्धांत ओरिजनली काकाजी और पप्पाजी ने पकड़ा। उन्होंने अपने जीवन में किस तरीके से संप, सुहृद्भाव, एकता रखा है, उसका मैं साक्षी हूँ।** मुझे याद है कपोलवाड़ी में जब बापा पधारते, तो रात को दस-ग्यारह बजे सभा खत्म होती। फिर एक कांतिकाका के पास जो गाड़ी थी, उसमें वे पहले काकाजी, पप्पाजी, ज्योति बहन, तारा बहन, ललिताबेन को ताड़देव छोड़ने जाते। फिर वापस आकर छगनभाई वगैरह को छोड़ने वालकेश्वर - चौपाटी की ओर जाते। फिर कई बार रात को हर्षदभाई, महीपतभाई, नानूभाई इन लोगों को छोड़ने माटुंगा जाते और यह जानते हुए भी कि ये लोग तो टोटली काकाजी–पप्पाजी के एन्टी हैं, कोई फर्क रखे बिना, वे इन लोगों को तकरीबन डेली छोड़ने जाते। जबकि कांतिकाका जानते थे कि सुबह पाँच बजे फिर बापा के पास काकाजी - पप्पाजी को लेकर जाना है। मैं कोई एग्ज़ैज़रेशन नहीं कर रहा, मैंने यह सब देखा है। हम तो नीचे चप्पल की ड्यूटी पर रहते थे। इसलिए आख़िर तक पता था कि अब काकाजी गए, अब ये हर्षदभाई गए वगैरह-वगैरह। तो देखो, **बापा की सुहृद्भाव की बात इन्होंने पकड़ी कि संबंध से - सुहृद्भाव से जीना है। अब काकाजी–पप्पाजी को एक बाजू पर करके या इनको भूलकर हम कितने भी सुहृद्भाव के नारे लगाते रहें, पर उसमें कोई ताक़त नहीं रहेगी। अगर हम ऐसा करें भी कि हम**

आपस में तो संप, सुहृद्‌भाव, एकता रखें, लेकिन काकाजी और पप्पाजी की कोई जरूरत न समझें, तो खूब याद रखना कि तुम्हारा जहाँ जो सेन्टर होगा, वास्तव में, वहाँ संप, सुहृद्‌भाव नहीं रह पाएगा। वहाँ बाइफरकेशन्स तुम खुद करने लगोगे, अलगाव खुद खड़ा हो जाएगा। भेदभाव खुद खड़ा हो जाएगा। लेकिन अगर इन दोनों विभूतियों को साथ में रखकर काम किया हो, तो वहाँ यह संभव ही नहीं हो सकेगा और... अभी भी काकाजी–पप्पाजी के साथ जीवन जिया हुआ भक्तों का ग्रुप मौजूद है... मैं कई बार कहता हूँ, पप्पाजी–काकाजी बताते कि स्वामिनारायण सम्प्रदाय क्या? कम्युनिज़म प्लस गॉड। भगवान को छोड़कर कोई भी कम्युनिज़्म रखने गया होगा, जैसे रशिया ने कोशिश की, वो आज अलग, अलग हो गया। इसी तरह **काकाजी, पप्पाजी दोनों को निगलेक्ट करके, एवॉइड करके या भूल करके, उसमें भी तुम एक को रखोगे और एक को नहीं रखोगे, तो वह भी नहीं चलेगा। हम कान खोलकर सुन लें, मन खोलकर सुन लें– काकाजी के साथ जुड़ा समाज अकेले काका, काका, काका करता रहेगा, तो भी यह नहीं हो पाएगा। पप्पाजी के साथ जुड़ा हुआ समाज पप्पा, पप्पा, पप्पा करता रहेगा, तो भी नहीं चलेगा। हम भले चलते रहेंगे, लेकिन जो कौवत (शक्ति) आना चाहिए, वो नहीं आएगा। तो, हर एक दिल से यह बात महसूस करे-पकड़े, इसलिए मैं आप लोगों को मेरे जन्मदिन पर जरूर आने के लिए कहता हूँ...**

दूसरा– भगवान प्रकटाने– गुणातीतभाव में रहने की बात कि त्याग, वैराग्य की जरुरत नहीं। मैं तो कहता हूँ हक़ीक़त में जरूरत नहीं है, पर **भगवान के भक्तों में आत्मबुद्धि रखेंगे तो ज्ञान, त्याग, वैराग, धर्म के जेवर भगवान अपनी गरज से हमें पहना ही देंगे, वो इम्बाइब हो जाएगा, कल्टीवेट नहीं करना पड़ेगा।** ये बात कैसी है कि बापा बोलते थे पर हमें उस समय विश्वास नहीं आता था। विश्वास बहुत बड़ी चीज है। ज्ञान तो दिल में भरा हुआ है। सत्पुरुष दृष्टि करेंगे, तो ज्ञान का फुवारा छूटेगा। हमारे दिल में से वे प्रगटाएंगे, पर वो विश्वास होना चाहिए। पर, हम सोचते हैं कि सच में ऐसा थोड़े ही होता है? दरअसल, हम लोग ऐसे ही हैं, इसलिए **काकाजी बोलते** थे कि तुम लोग '**श्रद्धालु नास्तिक**' हो। श्रद्धालु नास्तिक ऐसे कि उनके इतने अनुभव भी हुए, लेकिन फिर भी सोचते हैं कि ऐसा थोड़े ही होता है। यह विश्वास कैसा होना चाहिए, मैं बताऊँ? एक बार काकाजी ने बताया था कि कुवैत के एक राजा को मुंबई में मोहम्मद अली रोड़ के एक रेस्तरां में चाय पीने बुलाया गया। तो, वहाँ जब लोगों को पता लगा कुवैत का राजा रेस्तरां में है, तो बाहर भीड़ इकट्ठी हो गई। भीड़ के शोर-शराबे को सुन कर राजा ने पूछा– क्या हुआ? उसे बताया गया– बाहर तो आपके दर्शन के लिए सब उमड़े हैं। तब उसे लगा कि ओहो! उसके दर्शन के लिए लोग आए हैं, तो उसने अपनी जेब में से सोने की मुहरें निकाल कर उछाल दीं। जिन्होंने विश्वास से झुक कर वे ले लीं, वे निहाल हो गए। बाकी जिन्होंने ऐसा सोचा कि ऐसे ही सोने की मोहरे थोड़े ही कोई फेंकता है– ऐसा सोचने वाले श्रद्धालु नास्तिक हुए। इसी तरह काकाजी-पप्पाजी ने इस बात का हमें विश्वास दिलाया है। स्वामी की एक बात है– पहले तो मुमुक्षु

भगवान को खोजते थे, आज भगवान मुमुक्षु को खोजते हैं। क्या हमें इस बात का विश्वास है कि भगवान हमें खोजेगें? लेकिन सच में इस बात को मान कर हम इसी मस्ती में रहें कि इतने सभी में भगवान ने हमें खोजा! पर, हर एक के लिए रीत अलग होती है। आज शांतिभाई साहेब ने बताया था कि उन्होंने शास्त्रीजी महाराज के हाथों वर्तमान धारण किया था। शास्त्रीजी महाराज ने तब कहा था यह तो बहुत बड़ा मुक्त है। तब मुझे मेरा अपना प्रसंग याद आया। हर व्यक्ति का अपना एक अलग नॅचर होता है, इसी तरह अगर मुझे कोई चिड़ाए, तो मैं और टाईट हो जाता हूँ। सो बापा ने मेरे साथ ऐसी ही एप्रोच की। सब जानते हैं कि सुंदराबाई हॉल में भादरण वाले अंबुभाई के लड़के देवेन्द्र–मेरे मित्र के ज़रीए हम पहली बार बापा के दर्शन करने के लिए गए थे। मतलब, मेरे ज़रीए घर के लोग बापा के दर्शन करने के लिए गए थे। बापा से मिलने के लिए लाईन में पहले धनप्रसादभाई, फिर मैं और फिर जनक था। बापा ने हम लोगों को पीठ पर थापे दिए थे, पर जब जनक आया तो बापा बोले, ओहो! यह तो पूर्व का मुक्त है। यूं करके वे मेरे अंदर बैठ गए कि मेरे ज़रिए तो ये सब आए, तो अब तो मुझे ही सिद्ध करना है कि पूर्व का मुक्त मैं हूँ। तो देखो, हर एक को गरजू बन करके उसे उसके ढंग से इन्होंने अपनी जकड़ में लिया।

हम कई बार सोचते हैं कि हम लोग तो ऐसे हैं, हमारा क्या होगा? दूसरों का तो होगा, पर हमारा तो नहीं हो पाएगा। गुणातीतानंदस्वामी ने इसीलिए अपनी एक बात में कहा है कि भगवान और संत कभी पत्थर पर सिर नहीं फोड़ते। अपने लिए यह कितनी बड़ी बात है! प्लस पॉवाइंट मिल गया। मेरे बारे में बोलते हैं न कि पाँच जन्म से साधु होते आए हैं। यहाँ वाले इसे अलग ढंग से लेते हैं कि हमारे गुरुजी हमारे कल्याण के लिए पांच जन्म से धरती पर आ रहे हैं। पर, गुरुजी जानते हैं कि पांच जन्म से कसर टलती नहीं होगी, इसलिए महाराज जकड़ कर ले आते हैं। पर, इतना तो पक्का है न कि पांच जन्म से जो मेरे पीछे परिश्रम कर रहे हैं, तो हम कैसे भी चलेंगे, वो हमें तब तक छोड़ने वाले नहीं हैं, जब तक हम सौ टंच का सोना नहीं बनेंगे। कइयों को चिंता रहती है, ओहो काकाजी स्थूल रूप से चले गए, पप्पाजी स्थूल रूप से चले गए और हमारी ये कसर रह गई। अरे, उन्होंने हमारे पीछे जो सिर फोड़ा है, वो बेकार थोड़े जाने देंगे... साहेब ने मुझे मेरी एक बात याद कराई थी कि मैं पप्पाजी से कहता था 'मने तमे नथी गमता'; लेकिन वे मुझसे कहते थे पण तू मने गमे छे... अगर पप्पाजी के मन में कोई भी फर्क होता कि दादुभाई अलग, तो वे ऐसा कह ही नहीं पाते। ऐसा एक प्रसंग मैंने पहले भी बताया था कि काकाजी अफ्रीका या ऐसे ही कहीं गए थे, तो मैं एक दिन अचानक दोपहर को ताड़देव गया था। रसोई के साथ वाले बीच के रूम में पप्पाजी पलंग पर बैठे थे, ज्योति बहन, तारा बहन वगैरह नीचे लाईन से बैठे थे। उनकी बातचीत चल रही थी। मैं चप्पल निकाल ही रहा था कि इतने में मैंने सुना कि पप्पाजी तारा बहन को इन्सट्रक्शन दे रहे थे कि दिलीप को मेरे साथ जमता नहीं है और काकाजी यहाँ हैं नहीं, तो तुम लोग उसका ध्यान रखना, मतलब पेसीफाई करते रहना। देखो पप्पाजी को क्या गरज थी, और फिर भी अगर हम कहें कि पप्पाजी अलग, काकाजी अलग, तो वो तो हमारा दृष्टि भेद है। एक बात समझना – बापा कई बार गोंडल का खूब पक्ष रखते, तो हर एक को रहता कि बापा को गोंडल का पक्षपात रहता है। इनको गोंडल का नहीं, हाँ

निर्मलस्वामी और बालमुकुंदस्वामी को अपनापन देने के लिए वे गोंडल का पक्ष रखते होंगे। इसी तरह कई मर्मों को हम समझें। अक्षरविहारीस्वामिजी को तो पता होगा कि कैसे हम सबको मूर्ख बनाकर वाटर कुलर के लिए इकट्ठे किए गए पच्चीस-तीस हज़ार रुपये रमणीकभाई से लेकर, पू. बापा ने गोंडल के ठाकुरजी के लिए चाँदी के थाल बनवा दिए। ये सारी चीजें एक इतिहास दे गई हैं।

सो भूलें नहीं कि इनकी बदौलत आज हम उजले हैं। यह बात एकदम सही है कि आज बापा, काकाजी और पप्पाजी के कारण हमारी पूछ है, वर्ना हमें कौन पूछता? सो हम कभी भूलें नहीं। जैसे मुझे काकाजी ने कहा था तुम भले ही कितने ही बड़े- 'मावजीभाई' हो जाओ, लेकिन ये हरिप्रसादस्वामी और अक्षरविहारीस्वामी दोनों तुम्हारे गवर्नर हैं...

✡✡✡

13 मार्च 2010 – प.पू. गुरुजी के प्राकट्योत्सव की सभा

प.भ. कमलदेवजी (लुधियाना)

...मैं अपने मुख से गुरुजी की महिमा गाने से पहले एक बात जरूर कहना चाहूँगा जो हमने, हमारे समाज ने, हमारे परिवार ने अंतर से महसूस की है कि **काकाजी महाराज ने आज के समय में अपने सारे अधिकार गुरुजी को दे दिए हैं। उन अधिकारों से गुरुजी ने हम पर जो कृपा करनी शुरु की है, करते आ रहे हैं, वह सालों से हम देख रहे हैं।** जिनके बारे में जो भी कहें, वह बहुत कम होगा, क्योंकि **वे तो एक ग्रंथ हैं।** एक बात पक्की है कि **गुरुजी एक ऐसी दिव्य विभूति हैं, जिनके दर्शन से अंतर्द्वंद्व सारे शांत हुए...** हमारे जीवन में जो मनोकामनाएँ हैं, जो हमारी फिलिंग्स कुछ नेगेटिव हैं, वे सब शांत हो जाते हैं। उनके दर्शन से जो पॉजिटिव वेव्स उभरती हैं, उन्हें शब्दों में कहा ही नहीं जा सकता। यदि मैं अपने जीवन, परिवार और पंजाब के प्रसंग कहने लगूँ, तो ग्रंथ लिखा जाए। उसका कारण क्या है? **काकाजी ने जो समझाया – जो आशीर्वाद दिए, आज उसी पद्धति पर चल कर गुरुजी काकाजी महाराज का सर्वोत्तम स्वरूप हो गए हैं।** सब भक्तों को अंतर से ऐसी पहचान हो चुकी है... ऐसे ही **गुरुजी एक मूर्तिमान मंदिर हैं; जहाँ भी जाएं, वहाँ मंदिर बना देते हैं, वहां भगवान विराजमान हो जाते हैं...** आज के इस पवित्र मौके पर गुरुजी से अंतर की प्रार्थना है कि काकाजी महाराज के कार्य को लेकर जो आप चल रहे हैं, हम सब आपके साथ एक अंश बनकर चल सकें, ऐसी ताक़त आशीर्वाद के तौर पर हम सबको जरूर प्रदान करना... कभी भी किसी भी बात के लिए – कहीं किसी का जन्मदिन हो, कभी किसी की दुकान की बात हो, कहीं कोई हर्षोल्लास हो – जब भी उनको पंजाब से कोई भी भगत अंतर से प्रार्थना करता है, गुरुजी उसकी एक आवाज़ पर अपनी सेहत को देखे बिना पहुँचने का हमेशा प्रयास करते रहते हैं। हम सारे पंजाब के हरिभगत अंतर से उनके शुक्रगुज़ार हैं। **गुरुजी को किसी से कोई लेना-देना नहीं है। उनके जीवन में हम एक ही बात देख रहे हैं कि काकाजी को राजी कैसे करना है...** ऐसी अंतर की दृढ़ता हम सबको आज के इस पवित्र मौके पर प्रदान करें, ऐसी अंतर की प्रार्थना।

प.भ. काशीराम राणा साहेब (सूरत)

हम सभी बहुत ही भाग्यशाली हैं कि **आज हम अपने जीवन के एक मार्गदर्शक, हमारे सुख-दुःख के साथी और समय-समय पर जो हमें मार्गदर्शन करके एक ऐसी राह पर ले जाते हैं कि जिससे हमारा जीवन धन्य हो, ऐसे गुरुजी का जन्मदिन मनाने के लिए इकट्ठे हुए हैं... वे अपने आप को गुरु नहीं मानते, बल्कि ऐसा आभास होता है कि वे हमारे कोई सखा, हमारे पिताश्री या हमें अच्छी शिक्षा देने वाले कोई अच्छे टीचर हैं। उनका जीवन इतना सिम्पल, इतना सिम्पल है कि ये गुरुजी कोई बहुत बड़े व्यक्तित्व वाले हैं, ऐसा हमें एहसास ही नहीं होता।** कभी-कभी मंदिर में – सत्संग में आते हैं, तो मैंने आज तक अलग-अलग एंगल से उनके स्वरूप देखे हैं। उनके दो स्वरूप जो मैंने देखे हैं, वे मैं कभी भी भूल नहीं पाऊंगा। एक स्वरूप तो ऐसा है कि **उनकी ऐसी हाई थिंकिंग है, वो पता नहीं लगती...** हमें समझ में नहीं आता कि इतना उच्च विचार लेकर चलने वाले, हाई थिंकिंग के ये गुरुजी हमें कौन-सी शिक्षा देने के लिए ये सब कुछ कर रहे हैं। लेकिन, अब हम सब जानते हैं क्योंकि कई सालों से गुरुजी से हमारा नाता जुड़ा है और दृढ़ भी होता जा रहा है। **उनके व्यवहार से हमें एक संदेश मिलता है कि अपने आप को कभी भी बहुत ऊँचा मत मानो जिससे कि हम छोटे आदमी को भूल जाएं।** छोटे से छोटे आदमी के साथ उनका जो व्यवहार है, जो प्यार देते हैं, मानो उनके प्यार के सागर से व्यक्ति का रोम-रोम भर जाता है... दूसरी ओर, **उत्तर भारत – दिल्ली में फैले हुए गुणातीत समाज का जब दर्शन करते हैं, तो हमें लगता है कि गुरुजी का व्यक्तित्व कितना जबरदस्त है... अनंत व्यक्तित्व के हमारे गुरुजी को काकाजी ने एक ऐसे एरिया की जिम्मेदारी दी, जहाँ कठिन स्थिति थी। गुजरात हो तो समझ सकते हैं, क्योंकि वहाँ समाज फैलाने के लिए आसान स्थिति है। पर, आर्षदृष्टा पू. काकाजी ने गुरुजी में शक्तियाँ देखीं कि यह व्यक्ति पूरे गुणातीत समाज को दिल्ली-पंजाब-उत्तरभारत में अवश्य फैलाएगा...**

मुबंई में भरतभाई का शायद जन्म दिन था और उस पर काकाजी से पूछा गया कि उनका 'हॅपीएस्ट डे' कौन-सा क्या था? तो काकाजी ने कहा कि हैपीयस्ट दिन मेरा वो था जब शास्त्रीजी महाराज ने चंदन से (लिप्त होकर) मुझे आलिंगन दिया। दूसरी बात उन्होंने यह की कि दूसरी बार मेरा 'हॅपीएस्ट डे' तब हुआ, जब मुझे योगीजी महाराज द्वारा भगवान का साक्षात्कार करवाया गया। लेकिन इससे भी अच्छी जो तीसरी बात उन्होंने कही और जो मुझे बहुत ही अच्छी लगी वह थी कि उनका 'हॅपीएस्ट डे' वह था जब संस्था से बापा ने उन्हें विमुख किया। बापा को मेरा भरोसा आया कि मैं बापा के परिवार को संभाल पाऊँगा। कैसा उच्च विचार, मानो काकाजी ने विष को अमृत बना दिया। इन्होंने समाज के सामने एक दृष्टांत रख दिया कि इसमें भी शायद स्वामिनारायण भगवान ने अच्छा ही सोचा होगा इसीलिए मुझे विमुख कर रहे हैं। वास्तव में ऐसा ही हुआ। आज हम देखते हैं तो लगता है कि जो भी हुआ वह बहुत अच्छा हुआ, क्योंकि इससे तो बहुत बड़े समाज का चारों ओर देश में फैलाव हो गया... मैं यह इसलिए कह रहा हूँ कि ऐसा ही भरोसा काकाजी ने गुरुजी के ऊपर किया

और उन्होंने उसे सार्थक कर दिया। यह इनका दूसरा स्वरूप है। वैसे तो कई गुण हैं, बहुत सारे कह सकता हूँ। **गुरुजी का कोई एसेसमेन्ट- कोई मूल्यांकन करना हो, तो मैं कहता हूँ वे उससे भी ऊँचे हैं।**

...चाहे स्वामिनारायण भगवान से या शास्त्रीजी महाराज से, योगीबापा से, हमारे हरिप्रसादस्वामी से या पप्पाजी, काकाजी से प्रेरणा पाकर गुरुजी ने जो राह पकड़ी है, वो मानव संस्कृति को बचाने और उसे मजबूत करने की राह है। इसीलिए वे प्यार बांटते हैं, सबको अपना बना लेते हैं... यह बहुत कठिन कार्य है, लेकिन गुरुजी बहुत आसानी से कर रहे हैं। **बिल्कुल सिम्पलीफाइड, कोई आडंबर नहीं, कोई ऐश्वर्य नहीं, कोई ऐसी आभा या ऐसा माहौल खड़ा नहीं किया, जिससे क्षण के लिए बड़े हो जाएं, बल्कि परमानेन्ट बहुत छोटे ही बन कर रहें, ऐसा गुरुजी के जीवन से हमें मार्गदर्शन मिलता है। सिम्पल लिविंग, हाई थिंकिंग!**

...कभी-कभी ऐसा मन होता है– चाहे रात हो, चाहे दिन हो कि गुरुजी के साथ बैठें, उनसे बातें करें। मेरे जीवन में बहुत सारे संत-महापुरुष आए हैं, पर ऐसे गुरुजी मैंने कभी नहीं देखे... हमारा तो कर्तव्य यही है कि हमने आज गुरुजी के तिहत्तरवें जन्मदिन पर बहुत कुछ पाया है। आज हम जो भी जी रहे हैं, गुरुजी की वजह से। अच्छी राह पर चल रहे हैं, गुरुजी की वजह से, और... हम अच्छे से अच्छे बनें, हमेशा यही गुरुजी की कामना रहती है। आज गुरुजी ने हम पर बहुत बड़ा भरोसा रखा है...

प.पू. वशीभाई (पवई)

...आज ऐसा लगता है जैसे वातावरण भी खूब मेहरबान है और वह भी डिविनिटी से जुड़ गया है... अभी मैंने मल्कानी साहेब को बताया कि हमारी इस सभा को शुरु हुए दो-ढ़ाई घंटा हुआ, लेकिन समय का पता ही नहीं चला। टेम्परेचर इज़ मेइन्टेन्ड एट २२ डिग्री! वातावरण में दिव्यता, स्टेज की भव्यता, महाराज के प्रकटभाव की अनुभूति और संतों के सान्निध्य से एक दिव्यभाव में हम जकड़े हुए हैं। सुबह महापूजा के बाद गुरुजी ने काकाजी के लेटर का रॅफरन्स देते हुए बात की कि आध्यात्मिक समाज की स्थापना हो गई। कल अक्षरविहारीस्वामी ने कहा कि संप, सुहृद्‌भाव, एकता से, टोटल डिविनिटी में जीने वाले एक समाज का निर्माण हुआ, जिसका नाम 'योगी डिवाईन सोसाईटी' दिया गया।

...ये दो दिन तो गुणातीतानंदस्वामी के टाईम में जैसे शिविर होते थे, वैसे शिविर जैसे हो गए। **काकाजी और पप्पाजी पृथ्वी पर जो स्वर्ग लाए, उसी के फलस्वरूप ऐसे दिव्य समाज की स्थापना हुई। किसी शिल्पी के बिना वह होता नहीं है... काकाजी ने गुरुजी के रूप में बेजोड़ शिल्प बनाया और अब गुरुजी द्वारा बनाए बेनमून शिल्प हम देख रहे हैं। धी टेस्ट ऑफ फूड इज़ इन इटिंग, धी टेस्ट ऑफ मेडीसीन इज़ इन क्यॉरिंग। ऐसे ही टेस्ट ऑफ एनी डिवाईन एंटीटी–जिनके द्वारा जिस समाज का सर्जन हुआ, उनके गुरु और खुद उनसे है... शिल्पकार तो सिर्फ स्थावर शिल्प बनाता है। लेकिन, गुरुजी तो स्थावर और जंगम दोनों शिल्प बनाने का कार्य करते हैं।** स्थावर में देखो तो– ३ फरवरी पार्क, काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग, अक्षरपुरुषोत्तम मंदिर, अक्षरज्योति ऐसे सब। जंगम-लिविंग– इट इज़ मोस्ट डिफिकल्ट... **अभी हम**

जो समाज देख रहे हैं, वो नाइन्टीन सिक्टी एइट टु टू थाऊजेन्ट टेन तक की गुरुजी की यात्रा का फल है।

...अक्षरविहारीस्वामी बहुत अच्छी तरह से बताते हैं कि **गुरुजी ने सुहृद्‌भाव का, कुटुंबभाव का पूरी तरह से उठाव लिया है – एक संस्कृति को पूरा चेइन्ज करने का या उसे करवट देकर पॉजिटिव मार्ग देने का...** गुरुजी, आप सचमुच बेनमून शिल्पकार हो। आपके चरणों में आज खूब-खूब प्रार्थना है कि सब भक्त जो आए हैं, उनका आप शिल्प बना ही रहे हो, तो अभी आपने और अक्षरविहारीस्वामी ने 'संप, सुहृद्‌भाव, एकता' का – दिव्य समाज का जो संकल्प किया है, **उस संकल्प में हम भी जुड़ कर आपकी योजना में – आपके काम में ऐसे लग जाएँ, यही प्रार्थना।**

प.पू. शांतिभाई (मोगरी)

योगीजी बापा और काकाजी से गुरुजी का सम्पूर्ण निर्दोषभाव का एक पक्का संबंध था। ऐसे दिव्य पुरुष के साथ संबंध करना, हर एक साधक के लिए अनिवार्य है। सुख के लिए हमारी जो कल्पना है वह सुख नहीं; बल्कि, सत्पुरुष के साथ का संबंध और भक्तों के साथ सुहृद्‌भाव सुखी होने की चाबी है...

ऐसे दिव्य पुरुष जब ब्रह्माण्ड में आते हैं और उनमें जुड़ कर, सच्चे भाव से, उनको और उनकी दिव्यता का स्वीकार करके, उनमें कोई मनुष्यभाव न रखते हुए परम दिव्यभाव से, जो जीते हैं, उन्हें अवश्य प्राप्ति होती है। गुरुजी ने ऐसा संबंध योगीबापा के साथ किया। सोनाबा का वात्सल्य पाया। काकाजी और पप्पाजी के साथ भी ऐसे जुड़कर उनकी भक्ति करके, 'स्व' बिल्कुल उनके चरणों में रख कर दासत्व का जीवन जिए, इसीलिए आत्मा की सारी समृद्धि उन्हें प्राप्त हुई है और वही समृद्धि भक्ति में लगाकर हमारे लिए सब कार्य कर रहे हैं जिससे हमारा परिवर्तन हो, हमारे सब दोष टल जाएं, हम सब सुखी हो जाएं... ऐसे गुरुजी से हम प्रार्थना करते हैं कि वे जैसा जीवन जीने की बात करते हैं और जैसा जीवन वे स्वयं जिए हैं, वैसा ही जीवन जीने योग्य हमें बनाएँ।

...आपने जो प्राप्ति की है, वैसी ही प्राप्ति हमें भी करनी है। हमारा यह संकल्प पूरा हो। योगीबापा, काकाजी और पप्पाजी ने हम पर जो विश्वास रखा, वह आपने तो पूर्ण किया। वैसे ही हम भी परमभाव के प्रति जो हमारी गति है, हमारी जो यात्रा है वह आप जैसे संतों की कृपा से, आशीर्वाद से, प्रार्थना से पूरी करें – ऐसी आपके चरणों में आपके जन्मदिन पर हम प्रार्थना करते हैं।

प.पू. कोठारीस्वामिजी (हरिधाम)

...आज अक्षरविहारीस्वामिजी और गुरुजी के आशीर्वाद लेने के लिए हम सब यहाँ आए हैं। आपने बापा, काका, पप्पा, और स्वामिजी – सभी गुणातीत पुरुषों को राजी किया है। सो, आज हमें ऐसे आशीर्वाद दें। दासस्वामी द्वारा काकाजी के लिए बनाए गए एक कीर्तन की कड़ी मुझे याद आती है –

मूर्ति स्वरूपे स्वयं तू छे तोय, मूर्ति तारा प्राण छे,
तेथी य अदका भक्तों छे व्हाला, तेमां तू गुलतान छे;
आशिष अर्पी सुखिया करजो, अंतर करे प्रेम वंदना,
आजे अहीं मंदिर छे...

...**बापा का, काकाजी का ऐसा सेवन करके प.पू. गुरुजी आज मूर्तिस्वरूप बने हैं और मूर्ति उनका प्राण है। फिर भी, इतने दासत्व से सहज जीवन जीते हैं।** गुरुजी को भक्त भी कितने प्यारे हैं, इसका दर्शन उनके जीवन जीने की शैली में सहज ही होता है। छोटे के साथ छोटे, बड़े के साथ बड़े बनते हैं। यह काकाजी ने उन पर खूब कृपा बरसाई है; हम साथ में रहे हुए हैं, इसलिए ख्याल है। **काकाजी ने पूरा जीवन दिव्य बना दिया, जिसकी वजह से एक सुहृद् समाज का सर्जन हो गया।** स्वामिजी हर बार गुरुजी के इस मंगल दिन पर पधारते ही हैं और यहाँ से वापिस जब हरिधाम लौटते हैं, तब इतना ही कहते हैं कि **गुरुजी ने एक अद्‌भुत समाज का सर्जन किया है। सचमुच! काकाजी को उन्होंने हाश (ठंडक) कर दी...** जीव से कोई साधन हो नहीं सकता। जो कुछ भी होता है, वह बड़े पुरुष की कृपा से होता है। गुणातीतानंदस्वामिजी ने बातों में लिखा है कि *आज्ञा और उपासना जो पालता हो, उसी पर बड़े पुरुष की कृपा होती है...* तो, शिक्षापत्री में महाराज ने छोटी-बड़ी जो आज्ञा दी हैं, हमारे जीवन में वे सहज ही बनें। प्रत्यक्ष की ऐसी उपासना सबके हृदय में प्रस्थापित तो हुई ही है, लेकिन ज्यादा से ज्यादा दृढ़ बनती जाए – ऐसे आज के मंगल दिन पर आप अंतर से आशीर्वाद देना। गुणातीतानंदस्वामिजी ने बात में लिखा है कि *बड़े (पुरुष) के अनुग्रह के बिना दोष टलते नहीं हैं...* उसमें काम और मान, ये दो तो बड़े (पुरुष) के अनुग्रह से ही जाते हैं। आज जो साधक आए हुए हैं, उन सब साधकों पर ऐसा अनुग्रह हो, क्योंकि जब मान टलेगा तभी दासत्व से जी सकते हैं। दासना दास थई, वळी जे रहेशे सत्संगमां, भक्ति एनी भली मानीश, राचीश एना रंगमां – ऐसा हमारा सहज जीवन बने। यह सत्संग दासत्व का है। यह सत्संग संबंध का है, हम सब के हृदय में उस संबंध का ख्याल आए, ऐसी सहज कृपा करें – यही आपके और अक्षरविहारीस्वामिजी के चरणकमलों में प्रार्थना!

प.पू. भरतभाई (पवई)

...गुरुजी जब काकाजी के पास ताड़देव आते थे, तब भी दर्शन किया है और यहाँ दिल्ली मंदिर में जब किराए की कोठी में मंदिर था, तब भी उनका बहुत बार दर्शन किया है और... **आज गुरुजी का योगीजी महाराज व काकाजी के रूप में जो दर्शन कर रहे हैं, वह अलग ही है।** इसलिए हम बहुत ही भाग्यशाली हैं कि हम ऐसे दिव्य संतों के सान्निध्य व आश्रय में आए।

स्वामिनारायण भगवान के पास एक भक्त आकर बोला कि *मैं बहुत अधम व पापी हूँ, आप मेरा उद्धार करो।* तब स्वामिनारायण भगवान ने एक बात कही – *लोहा पानी में डूब जाता है, लकड़ी तैरती है। लोहे को यदि तैरना हो, तो वह लकड़ी से जुड़ जाए।* सो, हम बहुत ही भाग्यशाली हैं कि हम उनसे जुड़ गए हैं। हमारा तो

उद्धार हो ही गया है और वे हमें वहाँ तक ले ही जाएंगे... **काकाजी ने गुरुजी को ऐसा तैयार किया है। उन्हें यहाँ दिल्ली और पंजाब में रख कर ऐसी स्थिति प्राप्त करवा दी है कि वे आज, काकाजी का कार्य आगे बढ़ाते हुए, हम सब को बहुत-बहुत आनंद करवा रहे हैं।**

गुरुजी की प्रत्येक क्रिया किसी थीम पर होती है। अब की बार गुरुजी का थीम यह है कि हमें मूल तत्त्व को भूलना नहीं है। प्रेमस्वामी, कोठारीस्वामी और संतमंडल ताड़देव आता, तो काकाजी कहा करते थे कि *आप जब भी प्रवचन करो, उसमें शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज को भूलना नहीं।* आज गुरुजी उसी मर्म को दूसरे शब्दों में हमें बता रहे हैं कि काकाजी का यह सब कहने में यही अभिप्राय था कि गुणातीत समाज की आधारशिला रखने वाली महान विभूतियाँ और जिनके ऊपर इस समाज की विशालकाय इमारतें आज बनकर तैयार हुई हैं, गुणातीत समाज के उन ज्योतिर्धरों–काकाजी व पप्पाजी को–हम कभी भूलें नहीं। आज सुबह गुरुजी ने बहुत अच्छी तरह से इसका विवरण किया है, वो कभी आपको समय मिले, तो कॅसेट में सुनना। बहुत ही स्पष्टता से उन्होंने हमें समझाया है कि काकाजी और पप्पाजी को अपने जीवन में किस तरह से आगे रखना है...

काकाजी की वाणी समझनी मुश्किल थी। वे हमेशा बोलते थे– *आमलीवाळी पोळ को देखकर आओ, जहाँ शास्त्रीजी महाराज रहते थे।* आमलीवाळी पोळ में एक छोटा सा कमरा था जिसमें शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज रहते थे। पर, काकाजी यह कहना चाहते थे कि हम भी यह न भूलें कि काकाजी ख़ुद कहाँ और कैसे रहते थे और किस प्रकार की परेशानियों से गुज़रे थे। दिल्ली में गुरुजी के जीवन में भी हमने देखा है कि कैसी-कैसी परिस्थितियों में से वे प्रसार हुए हैं। इधर जो शिलालेख लगा हुआ है, उसे पढ़ोगे तो पता चलेगा कि किन परिस्थितियों में काकाजी ने गुरुजी को यहाँ भेजा और कैसे उन्होंने यहाँ सत्संग कराया। कल रात बारह बजे जब गुरुजी का जन्मदिन मना रहे थे, तब वे बोले कि काकाजी ने जब यहाँ भेजा, तब बुलाने पर भी पाँच-सात आदमी नहीं आ सकते थे और आज सौ-दो सौ भक्त लोग रात को बारह बजे ऐसे ही इकट्ठे हो जाते हैं।

गुरुजी बहुत भजनीक हैं। गुरुजी ने हमेशा भजन का सहारा लिया है और यही बात वे हम से करवाना चाहते हैं। कल रात को एक बज गया था। तो गुरुजी ने बताया कि मैं रात को तीन बजे उठ गया और कॉफी पीकर भजन किया... **पिछले एक वर्ष से सुबह फिक्स्ड टाईम धुन करते हैं और करवाते हैं... आज गुरुजी ने प्रथम प्रॉयरिटी भजन को दी है...**

और... लास्ट में एक बात करता हूँ कि **गुरुजी को क्वॉंटिटी नहीं, क्वालिटी चाहिए और उसके पीछे वे हमेशा लगे रहते हैं। कोई भी छोटी से छोटी चीज होगी, वह उससे बेहतर कैसे बनें, उसके पीछे वे हमेशा अपना पूरा समय लगाते रहते हैं...** आज यही प्रार्थना कि हम उनकी शरण में पड़े रहें। वे हमसे जो करवाना चाहते हैं, उनकी तरफ दृष्टि रखकर, उनके वचन के मर्म को समझकर हम लगे रहें...

प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी

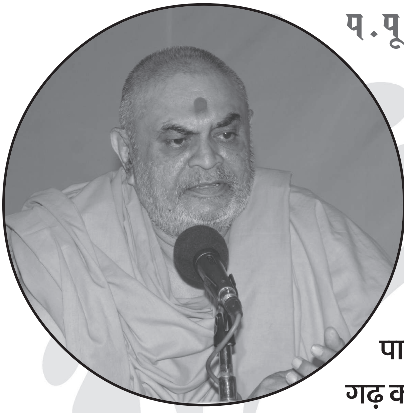

...सबने यहाँ गुरुजी के विभिन्न प्रकार के गुणों का दर्शन करवाया। असलियत में प्रभु की जैसी प्रेरणा होती है, उसी के अनुसार उनका सब कार्य होता है... तो, पूरे गुणातीत समाज की ओर से उन्हें कोटि-कोटि धन्यवाद कि उन्होंने काकाजी के कार्य को अखंडित रखा है, अब भी वे यह कार्य कर रहे हैं और आगे भी करते जाएंगे, क्योंकि उन्हें काकाजी का ऋण अदा करना है... **बापा ने आशीर्वाद दिया था कि पात्र भी मैं गढूंगा और ब्रह्मरस भी मैं ही भरुँगा और उन्होंने पात्र गढ़ कर, ब्रह्मरस भी भर दिया...** ऐसे संत होने का आशीर्वाद जब योगीजी महाराज ने गुरुजी को दिया है और काकाजी-पप्पाजी का उन्होंने सेवन किया है, तो ऐसे गुरुजी गुणातीत समाज के मुक्तों के लिए संकल्प और प्रार्थना करें कि सभी के जीवन में उनके आशीर्वाद साकार हों...

प.पू. गुरुजी

...काकाजी सच में जौहरी थे। वे कहते भी थे कि मैं जौहरी हूँ। थोड़े दिन पहले सांकरदा मंदिर के खात्मुहूर्त की पत्रिका मेरे हाथ में आई। सांकरदा मंदिर की मूर्तिप्रतिष्ठा के समय काकाजी ने आशीर्वचन देते हुए बोला है कि बापा मुझे कहते थे–

'दादुभाई, हमारी बहुत बड़ी योजना है और उसमें तुम्हें खूब कार्य करना है – तुम दोनों भाइयों को कार्य करना है।' काकाजी बोले– *हमें लगा कि कोई मंदिर बनवाना होगा, ऐसा कुछ होगा। लेकिन बापा तो यह बात करते थे कि हमें नए संत बनाने हैं और फिर ५१ संत बनाए भी। उनमें ३५ चैतन्यशक्ति - विराटशक्ति हमारे साथ हैं, उनके पीछे ये युवकशक्ति है।*

वह पत्रिका यदि अब हम पढ़ें, तो ख्याल आएगा कि **काकाजी को कैसा विज़न होगा! वे विज़नरी पुरुष थे,** पर कई बार हम उन्हें समझ नहीं सके। उनकी भाषा कई बार इतनी ऊँची कि उसे टुकड़ों में समझना पड़े। कल शिविर में एक सूत्र लिखा था; वह बहुत अच्छा है पर दरअसल वह काकाजी का ही है। एक प्रसंग बापा बताते थे कि एक मियां था। वह हमेशा अपनी बीबी पर गुस्सा खाता रहता था कि क्या हर रोज एक ही चने की रोटी और चने की दाल बनाती रहती हो, कुछ और खाना बनाओ। कोई और सब्जी नहीं मिलती ? पर घर में वह पैसे-वैसे लाए नहीं और बीबी पर रौब झाड़े। फिर एक बार बोला– अब दूसरी सब्जी नहीं बनाओगी, तो मैं खाना नहीं खाऊंगा। एक-दो दिन उसने खाना नहीं खाया। फिर कहता है भूख लगी है, कुछ दे दो। बीबी ने कहा– यही चने की दाल और यही चने की रोटी जब खाओगे, तब भूख जाएगी। मतलब कोई चारा है ही नहीं। इसी तरह सालों से आप लोग यहाँ आते हो। संतों के पास कोई जाता है, तो इसलिए जाता है कि उसका अपना कोई दुःख हो, वो हल हो जाए, टल जाए, सुख-शांति मिले। काकाजी ने एक जगह लिखा है – महाराज ने जीव को सुखी करने के लिए अति रहस्य की, एकांत की, प्यारभरी बात की, लेकिन महाराज के सर्वोपरिभाव और दिव्यभाव की बात कोई समझा नहीं... फिर बात आई उनके

अखंडभाव की, जो कि सच्चे भगवदी के समागम के बिना उस मर्म को कोई समझ नहीं पाएगा। स्वामिनारायण संप्रदाय की सबसे बड़ी देन यही है कि इनके यहाँ प्रभु प्रगटाए हुए संतों की एक अखंडित परंपरा जारी रही है – कोई ब्रेकअप नहीं हुआ है। इसी को काकाजी कहते थे– *'धीस पावर हाउस इज़ कॉन्सटन्ट एण्ड कन्टीन्यूअस।'* और… इसीलिए आज जो हम बात कर रहे हैं, वह शक्य और संभव है। कई कहते हैं कि यह हो नहीं पाएगा। यदि डॉक्टर कोई ऑपरेशन करता है, उस दौरान बिजली चली जाए या पावर कट हो जाए, तो वह ऑपरेशन अधूरा रह जाएगा और पेशन्ट मर जाएगा। इस तरह चैतन्यों के शुद्धिकरण की महाराज ने जिम्मेदारी ली है, यदि वह पावर हाउस बीच में ही ब्रेकअप होता रहे, तो हमारे चैतन्य का विकास कैसे होगा? लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। फट इनवर्टर चालू होता है और दूसरा पावर हाउस काम करने लग जाता है। ये बातें काल्पनिक या मन बहलाने के लिए नहीं हैं। एक हक़ीक़त है। आप लोग श्रद्धा से आते हो, मेरे मन में कम से कम इतना तो रहेगा न कि आप लोगों के साथ मैं शराफत से पेश आऊँ – कोई धोखा न करूँ। काकाजी ने कई अत्यंत मर्मभरी चीजें समझाई हैं। हम सब संतों को एक ही पलड़े में ले लेते हैं। काकाजी ने हमेशा **'बड़े पुरुष'** व **'अतिशय बड़े पुरुष'** कह कर **भेद बताया है।** तो स्वयं बोलते थे **काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी हम सभी अतिशय बड़े पुरुष!** अपना मन हां–हां करता है, लेकिन हम सबको एक ही लाईन में लेकर चलते हैं कि ये भी काकाजी-पप्पाजी जैसे हो गए। पर कहाँ काकाजी, कहाँ पप्पाजी और कहाँ स्वामिजी?

…**'भगवदी के साथ सुहृद्भाव'** – ये कोई आसान चीज नहीं है। लेकिन हम खूब खुशनसीब हैं कि ऐसे संत ऐसा जीवन जीकर, डेमोंस्ट्रेट करके, हमारे लिए मिसाल छोड़कर गए हैं कि आप लोग भी ऐसे जीओ। गुणातीतानंदस्वामी का एक सेवक था। 'हाटीना माळिया' गाँव का रहने वाला अमरसिंह मेघाणी। उसने रुई का व्यापार किया और अचानक ही रुई के भाव बिल्कुल गिर गए और उसे हॅवी लॉस (खूब नुकसान) हुआ। इस पर एक विचार करो कि वो धंधा कैसा किया होगा? जुआ ही खेलता होगा न! आज के शॅयर बाजार का काम जुआ ही है न! शिक्षापत्री में महाराज ने स्पष्ट रूप से मना कर दिया है… मतलब, स्वामी की बात तो उसने मानी ही नहीं – भले ही आत्मबुद्धि से जुड़ा हो, कुटुंबभाव से रहता हो, स्वामी के साथ लगाव हो – सब कुछ हो, लेकिन स्वामी की आज्ञा तो नहीं मानी। वह स्वामी के पास आया और उन्हें बताया कि उसे इतना लॉस हुआ है कि उसकी इज्जत ही चली जाए। तो, उसकी बात सुनकर स्वामी ने कहा – चिन्ता न कर, भगवान सब ठीक ही करेंगे। इससे भी अधिक – कोठार में जाकर कोठारी से स्वामी ने कहा कि इसे सोलह हज़ार कौड़ी का जो घाटा हुआ है, वह दे दो, ऐसे भगत की लाज नहीं जाने देनी चाहिए; सो, अभी फिलहाल मंदिर में से इसे दे दो… इसके पास जब पैसा आएगा, तब वो लौटा देगा। साथ ही एक वाक्य यह भी कहा – यदि नहीं भी लौटाए, तो ऐसे भगत के लिए कुर्बान है… हमारे संपर्क में कोई ऐसा सेवक हो और ऐसा हुआ हो, तो हम क्या बोलेंगे – पूछ के किया था? भुगतने दो। पर, यह आत्मबुद्धि नहीं। कई ऐसे सेवकों या साथीदारों के मिसबिहेव करने से हमारा मन ऐसा हो जाता है, पर ये जो मन है, हमें उसके संग नहीं रहना है… तो हमें यहाँ डिस्क्रीमीनेशन समझ लेना चाहिए कि यह जो सारा आरग्यूमेन्ट अंदर होता है, वह मन के कारण है, जो हमें

संबंध से दूर ले जाता है। हमें संबंध देखना है। स्वामी ने क्या किया कि भई नहीं, ऐसे भगत के लिए कुर्बान है। ऐसी **आत्मबुद्धि**, ऐसा **सुहृद्भाव हम बनाए रखें– वो निश्रा, असाधारण हेत, असाधारण प्रीति, असाधारण विश्वास, असाधारण प्रसंग... सदा सुखी रहने के साधन हैं।** आज हम चार घंटे बैठे, तो इस बात को समझ कर जाएं। कुछ ले जाने जैसा नहीं है, खाली यह एक बात ही ले जानी है कि ओहो ऐसे साधु की हमें सेरेछाया दी है। उनकी निश्रा में हम जिएं और इनके **संबंध वाले भक्तों के साथ वैसा ही सुहृद्भाव, आत्मबुद्धि व प्रीति हो, जैसी अपने देह के संबंधियों के साथ होती है।** हमें उनसे प्रीति है, लेकिन आत्मबुद्धि नहीं है। तो जैसी आत्मबुद्धि हमें अपने परिवार में है, वह करनी है और वह हो जाए– ऐसा अक्षरविहारीस्वामिजी आशीर्वाद देकर जाएं, इतनी प्रार्थना। **प्रारब्ध-प्रकृति टालने के लिए यह सिम्पल उपाय है।** ज्योतिषी के पास जाओ, ग्रह दिखाओ कुछ नहीं होगा। ज्योतिषी फ्यूचर बता पाएगा, पर वह प्रारब्ध को बदल नहीं पाएगा। जबकि स्वामिजी जैसे संत तो हमारे प्रारब्ध-प्रकृति को भी एक बार कह देंगे कि रूक जाओ! यूँ करके टाल देंगे। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

P. Malkani Uncle (Delhi)

Sahajanand Swami Maharaj Ki jay !

I welcome all the holy divinities on the dias. They have always been very kind to join us in Delhi during the celebrations. Welcoming all the satsangis at large from all the centres of India, I thank all of you. Today is the day of joy. It is a day of celebration. It is P.P. Guruji's birthday. In reality, if we touch our hearts, we enjoy Guruji's presence, His birthday, everyday. The past few days have been most memorable. The three days that we spent at the *'samadhi sthan'* were so joyous and full of *'AANAND'*. During those three days I had a small thought which I expressed to Guruji. All those three days were the days of the blissful presence of the Divine. So many times we think of heaven. I was thinking in my mind during those three days, if this is not heaven, what else can be heaven? There was Heavenly Bliss. All these, three days – the 11th, 12th and today the 13th, we have had visions of greatness. So many present here have spoken about the glory of Guruji. I so myself. I know that Guruji has all the attainments and attributes of a Great Sadhu, as described in Vachnamrut. But His greatest quality, greatest virtue, greatest endeavour has been His divine love which flows freely. He is a sadhu who can be recognized by His divine love for all. We all benefit from His love and other attributes. So, within our hearts, within our minds, within all our domains, let us celebrate His birthday in its true sense by trying to become; I am not saying that we may become or we can become but trying to become one like Him. Once again my congratulations to all, my prayers to all the divinities on the dias and Jay Swaminarayan to all of you for being here. Thank you.

✡✡✡

(ध्वनिमुद्रण पर आधारित)

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि. 24.9.'10,	शुक्रवार	— ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज – स्मृति पर्व
(2)	दि. 27.9.'10,	सोमवार	— ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज – स्मृति पर्व
(3)	दि. 1.10.'10,	शुक्रवार	— परम पूज्य दिनकरभाई का प्राकट्य दिन
(4)	दि. 3.10.'10,	रविवार	— भगवान श्री स्वामिनारायण – स्मृति पर्व
(5)	दि. 4.10.'10,	सोमवार	— एकादशी, ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज एवं ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज – स्मृति पर्व
(6)	दि. 5.10.'10,	मंगलवार	— मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी एवं ब्रह्मस्वरूप भगतजी महाराज – स्मृति पर्व
(7)	दि. 8.10.'10,	शुक्रवार	— नवरात्रे प्रारंभ
(8)	दि. 17.10.'10,	रविवार	— **दशहरा**, प्र.ब्र.स्व.प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का पार्षदी दीक्षा दिन
(9)	दि. 18.10.'10,	सोमवार	— एकादशी, व्रत
(10)	दि. 20.10.'10,	बुधवार	— मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी अंतर्धान तिथि
(11)	दि. 22.10.'10,	शुक्रवार	— **शरदपूर्णिमा**, मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामिजी का प्रागट्य दिन **प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का भागवती दीक्षा दिन** **प.पू. दिनकरभाई की प्राकट्य तिथि**
(12)	दि. 25.10.'10,	सोमवार	— ब्रह्मस्वरूप जागास्वामिजी की जन्मजयंती
(13)	दि. 2.11.'10,	मंगलवार	— एकादशी, व्रत
(14)	**दि. 3.11.'10,**	**बुधवार**	— **धनतेरस** **अशोकविहार मंदिर में 'धनपूजा'– सुबह 8:00 से 9:30**
(15)	दि. 4.11.'10,	गुरुवार	— काली चौदस
(16)	**दि. 5.11.'10,**	**शुक्रवार**	— **दीवाली** **अशोकविहार मंदिर में 'शारदा पूजन'– सायं 4:30 से 6:00**
(17)	**दि. 6.11.'10,**	**शनिवार**	— **अन्नकूटोत्सव** **दिल्ली गुणातीत कुनबे का वार्षिक स्नेहमिलन – सुबह 9:30 से 11:30** **अन्नकूट आरती – सुबह 11:45 बजे**
(18)	दि. 7.11.'10,	रविवार	— **नूतन वर्ष–विक्रम संवत २०६७ प्रारंभ, भैयादूज**
(19)	दि. 10.11.'10,	बुधवार	— **लाभपंचमी**
(20)	दि. 17.11.'10,	बुधवार	— प्रबोधिनी एकादशी–व्रत, तुलसी विवाह-प्रारंभ
(21)	दि. 21.11.'10,	रविवार	— **देवदिवाली**, तुलसी विवाह-समाप्त, श्री गुरुनानक जयंती

'पायामां पूरायो छे तुं, महेल भले आलीशान...'

सो, वे हमारा अहित होने ही नहीं देंगे।

‘मंदिर बनाव्युं आप बिराज्या, करवी शुं आराधना;
हृदय मंदिरिये कायम बिराजो, भुलकांनी छे प्रार्थना...’

गुरुपूर्णिमा...

प.पू. गुरुजी को प.भ. काशीरामभाई राणा साहेब द्वारा हार-अर्पण।

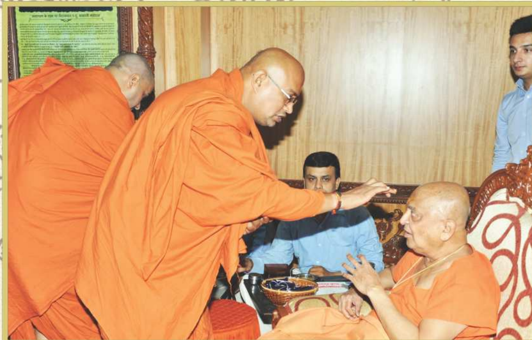

प.पू. दीदी को सौ. सगीनाभाभी (जगरांव) द्वारा हार-अर्पण।

R.N.I. 28971/ 77

Air Mail

'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched Bimonthly

If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :-*

SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI

'Taad-dev', Kăkăji Lane, Swăminărăyan Mărg, Ashok Vihăr-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327

Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A 6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052